श्री बाहुबली भगवान, श्री श्रवणबेलगोला जी

RNI-MAHBIL/2010/33592

जैन तीर्थवंदना

श्री ऊर्जयंत गिरनारजी

वर्ष : 14	अंक : 12	मुम्बई, मार्च 2025	पृष्ठ : 32	मूल्य : 25	हिन्दी
VOLUME : 14	ISSUE : 12	MUMBAI, MARCH 2025	PAGES : 32	PRICE : 25	English Monthly

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का मुखपत्र

वीर निर्वाण संवत् 2551

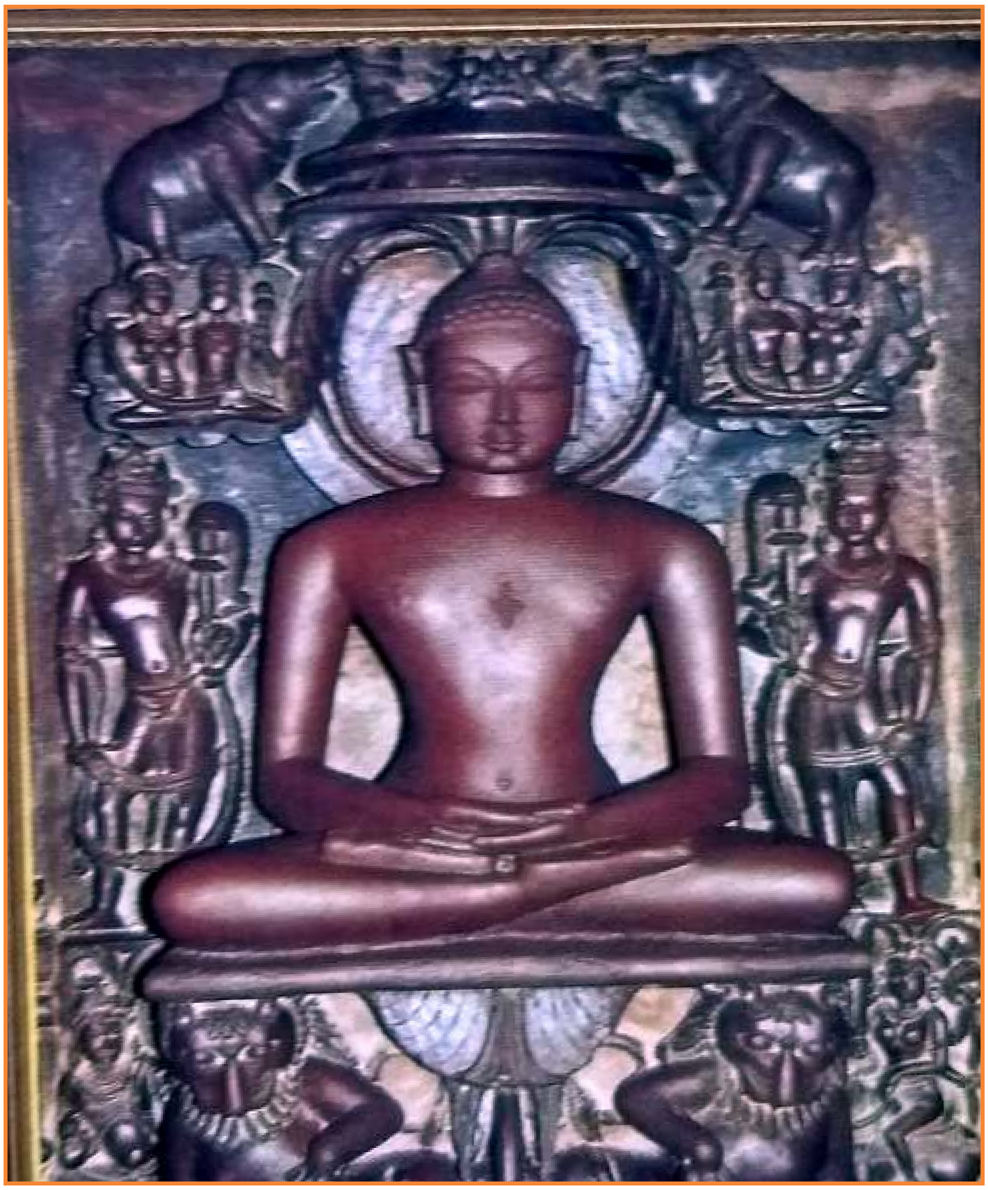
तीर्थंकर श्री 1008 महावीर स्वामी भगवान, अतिशय क्षेत्र चांदखेड़ी, राजस्थान

जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट का

मुखपत्र

वर्ष 14 अंक 12 मार्च 2025

संपादक मंडल

प्रधान संपादक

डॉ. अनुपम जैन, इंदौर

संपादक

श्री उमानाथ रामअजोर दुबे

संपादकीय सलाहकार

डॉ. वीरसागर जैन, दिल्ली

डॉ. अनेकांत जैन, दिल्ली

श्री राजेन्द्र जैन महावीर, सनावद

डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर

कार्यालय

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी

हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई 400 004.

फोन :

E-mail : tirthvandana4@gmail.com

Website : tirthkshetracommittee.com

'भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी' को प्रेषित की जाने वाली राशि बैंक ऑफ बड़ौदा, वी.पी.रोड, मुंबई के सेविंग खाता नं.13100100008770 अथवा बैंक ऑफ इंडिया, सी.पी.टैंक, मुंबई के सेविंग खाता नंबर 001210110008627 में किसी भी शाखा में नि:शुल्क जमा कराकर उसकी सूचना मुंबई कार्यालय को देने की कृपा करें।

मूल्य

वार्षिक	:	300 रुपये
त्रिवार्षिक	:	800 रुपये
आजीवन (दस वर्ष)	:	2500 रुपये

विज्ञापन आमंत्रित हैं.

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं. सम्पादक का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है।

वीर निर्वाण संवत् 2551

इस अंक में

सर्वोदय की भावना के प्रतीक - तीर्थंकर भगवान महावीर	8
मेरी आत्मकथा - तीर्थंकर भगवान् महावीर	10
योगविद्या के प्रवर्तक : तीर्थंकर ऋषभदेव	15
आचार्य सिद्धसेन (कुमुदंचद्र जी)	17
सिद्धत्व का महापथिक और नेमावर	18
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के सम्बद्ध तीर्थक्षेत्रों की सूची	20
पावापुरी (बिहार) सिद्धक्षेत्र	28

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के सदस्य बनकर तीर्थों के संरक्षण-संवर्धन और उनके विकास में मार्ग दर्शन दीजिये

संरक्षक सदस्य	रु. 5,00,000/-	सम्माननीय सदस्य	रु. 31,000/-
परम सम्माननीय सदस्य	रु. 1,00,000/-	आजीवन सदस्य	रु. 11,000/-

नोट:

1) कोई भी फर्म, पेढ़ी, कम्पनी, धर्मादाय ट्रस्ट, संयुक्त कुटुम्ब, सोसायटी भी उपर्युक्त प्रावधान के अंतर्गत सदस्य बन सकेंगे। इस प्रकार की सदस्यता केवल 25 वर्षों के लिये होगी।

2) जो सदस्य आयकर की छूट चाहेंगे उन्हें 80जी के अंतर्गत कुछ रकम पर 80जी का लाभ मिलेगा।

3) सदस्यता से प्राप्त राशि ध्रुवफण्ड में जमा रहेगी उसके व्याज की आय ही व्यवस्थापन एवं तीर्थक्षेत्र के संरक्षण, संवर्धन तथा उनके जीर्णोद्धार में व्यय की जायेगी।

अब और हम कितना बटेंगे?

जैन धर्म अनादिनिधन, प्राकृतिक एवं शाश्वत धर्म है। इसका न कोई आदि है और न अन्त। वर्तमान कालखण्ड में भगवान ऋषभदेव से भगवान महावीर पर्यन्त 24 तीर्थकरों के कालखण्ड में अनवरत रूप से चला आ रहा है। पौराणिक सन्दर्भो के आधार पर कुछ काल में जरूर व्यवधान आया था किन्तु भगवान शांतिनाथ के काल के बाद से यह निर्बाध रूप में गतिमान है। मात्र इतना ही नहीं वैदिक परम्परा के प्राचीनतम ग्रंथों एवं पुरातत्व में निर्ग्रन्थ दिगम्बर जैन धर्म के सन्दर्भ प्रचुरता से उपलब्ध हैं।

भगवान महावीर के निर्वाण (527 ई.पू.) के लगभग 175 वर्षो के बाद श्रुतकेवली भद्रबाहु के समय 12 वर्षीय दुर्भिक्ष पड़ा। परिस्थितिवश आचार्य भद्रबाहु ने संघ को दक्षिण गमन का निर्देश दिया। जो साधु उज्जैन से दक्षिण की ओर गमन के समय साथ नही गये वे दुर्भिक्ष के समय बल्कल एवं श्वेत वस्त्र धारण करने लगे, भिक्षावृत्ति कर उदारपोषण करने लगे। कालान्तर वे ही संगठित रूप में **श्वेताम्बर** बन गये एवं प्रकारान्तर से दक्षिण से वापस लौटे मूल परम्परानुयायी नग्न संतों को दिगम्बर संज्ञा दे दी गई। इस प्रकार जैन संघ **दिगम्बर** एवं श्वेताम्बर 2 भागों में बंट गया।

प्रारम्भिक रूप में लगभग 300 ई.पू. में बने श्वेताम्बर जैन संघ की स्थापना के लगभग 600 वर्षों के बाद 325 ई. के लगभग कुछ श्वेताम्बर मुनियों ने विहार करना छोड़ मन्दिरों में रहना शुरू कर दिया और वे चैत्यवासी अथवा जती कहलाये। पुनः 15 वीं श. ई के लगभग अहमदाबाद के लोकाशाह ने मूर्ति पूजा का विरोध करते हुए लोंकागच्छ की स्थापना की कुछ और मुनियों ने आचार परम्परा में सुधारकर ढुंढ़िया मत की स्थापना की। लोंकागच्छ एवं ढुढ़ियाँ मत के सभी अनुयायी अपनी धार्मिक क्रियायेँ गुरू आवास स्थान अर्थात स्थानकों में सम्पन्न करते ये फलतः उनको स्थानकवासी संज्ञा प्रदान की गई।

स्थानकवासी समाज में से ही 1760 ई. के लगभग आचार्य भिक्षु के नेतृत्व में तेरापंथ श्वेताम्बर पंथ का उदय हुआ। इस प्रकार श्वेताम्बर संघ मूर्तिपूजक, चैत्यवासी, स्थानकवासी एवं तेरापंथी में बंट गये।

दिगम्बर परम्परा के संत प्रारम्भ में वनों एवं उपवनों में रहते थे। वर्षावास को छोड़कर प्रायः एक स्थान पर नहीं रहते थे किन्तु 4-5 वीं श. में मन्दिरो में रहने की प्रवृत्ति बढ़ी एवं फलतः अध्ययन एवं विशेष कार्यो हेतु मन्दिरों के साथ-साथ एक वर्ग ने राजनैतिक परिस्थितिवश लाल वस्त्र धारण किये किन्तु पूर्ण रूप से दिगम्बर शास्त्रों, संतों के प्रति आस्था रखते थे एवं दिगम्बर मूर्तियों की ही प्रतिष्ठा कराते थे। इस भट्टारक सम्प्रदाय ने दिगम्बरत्व की रक्षा एवं प्रभावना में बहुत योगदान किया है। दिगम्बर मुद्रा ही उनकी आदर्श थी किन्तु मुगलों के बढ़ते प्रभाव के कारण दिगम्बर मुनि चर्या मुश्किल हो गई एवं भट्टारकों का प्रभाव बढ़ गया। भट्टारक परम्परा में बढ़ते शिथिलाचार के विरोध में 17 वी श. में प. बनारसीदासजी ने एक नये पंथ को जन्म दिया जो तेरहपंथ कहलाया। फलतः भट्टारकों के अनुयायियों ने स्वयं को बीसपंथी कहना शुरू कर दिया। ये बीसपंथी प्राचीन आगम पद्धति को स्वीकार कर पंचामृत अभिषेक करते, हरे फल, फूल आदि चढ़ाते थे किन्तु तेरहपंथी उनका विरोध करते थे।

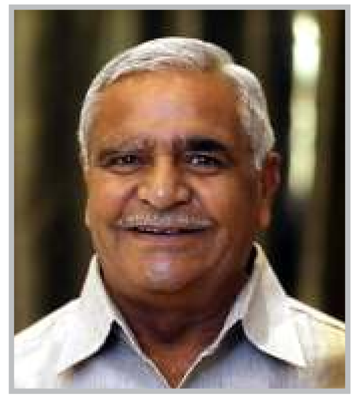

15वीं श.ई. में मंडलाचार्य तारण स्वामी ने एक पंथ तारणपंथ चलाया जो मूलतः दिगम्बर परम्परा एवं सिद्धान्तों को ही स्वीकार करता है। बुन्देलखण्ड एवं महाराष्ट्र सीमा के क्षेत्रों मे समैया समाज तारणपंथी है। श्री कानजी भाई की स्वाध्याय की वृत्ति समयसारदि द्रव्यानुयोग के ग्रन्थों के अध्ययन को अधिक महत्व देने वाले मुमुक्षु आज कानजीपंथी कहलाने लगे। कुछ मन्दिर में भी इस वर्ग का प्राबल्य होने के बावजूद ये अन्य दिगम्बर मन्दिरो में भी पूर्ण आस्था से जाते हैं।

इस प्रकार कई भेद होने के बावजूद दिगम्बर परम्परा में कोई उल्लेखनीय अन्तर नहीं आया है। सभी एक ही शास्त्रों एवं गुफाओं को मानते है। किन्तु इन सबके के कारण हम बंटते चले गये।

निरन्तर बटने की इस प्रवृत्ति के कारण हमारी ताकत घटती जा रही है। धार्मिक विद्वेष के कारण, विदेशी आक्रान्ताओं के अत्याचारों के कारण तथा अन्यान्य कारणों से जैन धर्मावलम्बियों का एक बड़ा भाग जैन धर्म छोड़कर दूसरे धर्मो के साथ जुड़ गया किन्तु जो जैन धर्म के प्रति आस्थावान होकर जिनेन्द्र भक्ति से जुड़े रहे वे भी विगत 2000 वर्षो में अनेक भागों में बट गये। आज दिगम्बर जैन समाज भी बीसपंथ, तेरहपंथ, तारण पंथ, कानजीपंथ आदि अनेक भागो में बट गया है। हर विभाजन से हम कमजोर ही हुए है क्योंकि संगठन की शक्ति तो अलग ही होती है।

अभी भी यह सिलसिला रुका नहीं हैं। आज एक तो साधु भगवन्तों के अनुयाइयों के नाम पर जातीय समूहों के नाम पर हम बटते ही जा रहे हैं। मुट्ठी भर जैन समाज कब तक खण्डित होती रहेगी?

विरासत में मिले महान तीर्थो, प्रभु की चरणरज से पवित्र सिद्धक्षेत्रों, कल्याणक क्षेत्रों की रक्षा, जीर्णोद्धार एवं विकास हम सबकी साझा जिम्मेदारी है। आइये हम सब सुविधाभोगी के आवरण से निकालकर अधिकाधिक तीर्थो की यात्रा करे, विकास में सहभागी बनें। घटती जनसंख्या एवं बटने की यह प्रवृत्ति हमें कहाँ ले जायेगी? सोचकर भी सिहरन होती है।

संघे शक्तिः कलौयुगे।

जम्बूप्रसाद जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष

बंधुओं भगनियों,

सादर जय जिनेन्द्र !

भारतीय परम्परा और संस्कृति का अतिप्राचीन संवत विक्रमसंवत प्रारंभ होने जा रहा है इसी संवत से हिंदी कलेंडर नूतन वर्ष का प्रारम्भ होता है अतः विक्रम संवत २०८२ की आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं, यह नूतन वर्ष हम सभी के लिए मंगलकारी होवे।

जैन धर्म के अंतिम तीर्थंकर एवं संसार के सभी प्राणियों को अहिंसा का पाठ पढ़ाने वाले भगवान महावीर स्वामी के जीवन और उनके सिद्धांतों से आज सम्पूर्ण विश्व प्रभावित है। हम १० अप्रैल को भगवान महावीर स्वामी का जन्म कल्याणक बहुत ही धूम-धाम से मनाने जा रहे हैं जिसे सारा देश महावीर जयंती के रूप में मनाता है। भगवान महावीर के जन्मकल्याणक (जन्मजयंती) के पावन अवसर पर आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाई !

श्री सम्मेदशिखर जी क्षेत्र हम सभी के लिए प्राणों से प्रिय सिद्धक्षेत्र है यह हमारी शान और पहचान का प्रतीक भी है। श्री सम्मेदशिखर जी पर विराजमान **"चरणचिन्ह"** प्रारम्भ से ही दिगम्बर परम्परानुसार ही विराजमान हैं वहां पर विराजित चरणचिन्ह इस बात का प्रमाण है कि यहाँ से अरिहंत परमेष्ठियों ने सिद्धत्व पद प्राप्त किया है। उनके चरणों के पास जाकर हमारे लिए सिद्धों के समीप जाने जैसा है।

श्री सम्मेदशिखर जी पहाड़ के विषय में लम्बे अन्तराल से विवाद चल रहा है पूर्व में दिगम्बरों की ओर से हमने रांची हाईकोर्ट में सफलता भी पाई है पश्चात यह केस आज सुप्रीम कोर्ट में लंबित है जो कि अत्यंत ज्वलंत हैं वर्तमान में हमें हमेशा अपनी तैयारी पूर्वक सावधानी और सतर्कता के साथ परिचय देने की आवश्यकता है। गत वर्ष यह केस अपने अंतिम निर्णय के लिए कोर्ट की बेंच पर आया पर किसी न किसी करणवश इस केस को टालने के प्रयास जारी रहें हैं। हमें पूरा विश्वास है कि शिखरजी की इस लड़ाई में हमें निश्चित ही सफलता मिलेगी हमें सभी गुरुजनों का मंगल आशीष व समाज के सभी श्रेष्ठी दानी-महानुभावों का पूर्ण सहयोग और समर्थन की आवश्यकता है।

तीर्थक्षेत्र कमेटी के इतिहास में दोनों पक्षों की ओर से अनेकों बार शिखरजी के विवाद को आपस में सुलझाने के प्रयास भी हुए हैं परन्तु अभी तक कोई सार्थक परिणाम निकल कर नहीं आ सका।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी पिछले सवा सौ वर्षों से दिगम्बर समाज के प्रतिनिधि के रूप में अपना पक्ष रखती आ रही है। तीर्थक्षेत्र कमेटी कानूनी विवादों के साथ-साथ पिछड़े एवं जरुरतमंद तीर्थक्षेत्रों के जीर्णोद्धार एवं संरक्षण संवर्धन का कार्य भी देखती है।

अतः मेरा समाज से अनुरोध है कि भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के साथ कदम से कदम मिलाकर अपना सहयोग देवें। आपसे प्राप्त सहयोग ही हमारा संबल है।

पुनश्च आप सभी को भगवान महावीर के जन्मकल्याणक एवं विक्रम संवत २०८२ नूतन वर्ष की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ,

संतोष जैन (पेंढारी)
राष्ट्रीय महामंत्री

भारतीय संस्कृति के विकास में जैनाचार्यों का योगदान

भारतीय संस्कृति अत्यन्त प्राचीन, समृद्ध एवं जीवन्त संस्कृति है क्योंकि प्राचीन भारत में एक स्वतंत्र सुपरीक्षित ज्ञान प्रणाली थी जिसके विकास में भारत के विभिन्न क्षेत्रों में रहने वाले मनीषियों ने योगदान दिया था। इस ज्ञान प्रणाली के विकास में धर्म, जाति, भाषा का कोई भेद नहीं था। जैन, बौद्ध और वैदिक तीनों परम्परा के ऋषियों एवं मुनियों ने भारतीय संस्कृति के विकास में अतुलनीय योगदान दिया। यदि हम व्यापक रूप से इस पर दृष्टिपात करते हैं तो अखण्ड भारत के अंग रहे वर्तमान अफगानिस्तान से म्यांमार तथा कश्मीर से कन्याकुमारी तक भारतीय संस्कृति की विविधता एवं गौरव के दर्शन होते हैं।

भारतीय संस्कृति का गौरव हमें देश के विभिन्न में अंचलों में फैले पुरातात्विक स्मारकों, मूर्तियों अन्य कलात्मक पुरावशेषों में तो मिलता ही है साथ ही हमारे पूर्वजों द्वारा संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, तमिल, तेलुगु, मलयालम आदि भाषाओं में लिखित प्राचीन पाण्डुलिपियों में भी प्राप्त होता है। राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन द्वारा किये गये सर्वेक्षणों के आधार पर आज लगभग तीस लाख जैन पाण्डुलिपियाँ देश के विभिन्न जैन शास्त्र भण्डारों एवं राजकीय प्राच्य विद्या प्रतिष्ठानों में उपलब्ध हैं। इनमें से अधिकांश जैनाचार्यों द्वारा प्रणीत ग्रंथों या टीकाओं की प्रतिलिपियाँ या संकलन ग्रंथ हैं। किन्तु मैं प्रस्तुत आलेख में कुछ जैन आचार्यों के योगदानों तक स्वयं को सीमित कर रहा हूँ। वर्तमान में उपलब्ध प्राचीन ग्रंथों के आधार पर हम कह सकते हैं कि हमारे पास लगभग 2000-2500 वर्षों का साहित्य ही उपलब्ध है। भगवान महावीर की परम्परा में उनके बाद शताब्दियों तक ज्ञान श्रुत रूप में संरक्षित रहा।

1. गौतम गणधर कृत चैत्यभक्ति

हमारे पास वर्तमान में उपलब्ध प्राचीनतम जैन साहित्य भगवान महावीर के समवसरण में उपस्थित उनके प्रमुख गणधर गौतम स्वामी की कृति चैत्यभक्ति है। इसे जयति भगवान स्तोत्र भी कहा जाता है। सर्वोच्च जैन साध्वी, गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने जैनाचार्य प्रभाचन्द्र कृत टीका सहित इसे विगत 2 दशकों में खूब प्रचारित-प्रसारित किया है। आचार्य प्रभाचन्द्र जी ने चैत्यभक्ति की संस्कृत टीका में लिखा है कि -

'श्री वर्द्धमान स्वामिनं प्रत्यक्षीकृत्य गौतम स्वामी इत्यादि स्तुतिमाह।'

अर्थात् गौतम स्वामी ने भगवान महावीर स्वामी के प्रत्यक्ष दर्शन कर जयति भगवान इन शब्दों से प्रारम्भ करते हुए स्तुति की है। इसका मूल श्लोक निम्नवत् है।

जयति भगवान् हेमाम्भोजप्रचारविजृंभिता-
वमरमुकुटच्छायोग्दीर्णप्रभापरिचुम्बितौ।

कलुषहृदया मानोद्भ्रान्ताः परस्परवैरिणो
विगतकलुषाः पादौ यस्य प्रपद्य विशश्वसुः।।

अर्थात् जो सुवर्णमय कमलों पर सामान्य मनुष्यों में न पाये जाने वाले और चरण क्रम के संचार से रहित प्रचार-गमन से शोभायमान हैं, देवों के मुकुटों में लगी हुई मणियों से निकलती हुई प्रभा से स्पर्शित हैं ऐसे जिनेन्द्र भगवान के चरणों में आकर कलुष हृदय वाले, अहंकार से युक्त, परस्पर वैरी ऐसे सर्प, नेवला आदि जीव अपने-अपने स्वाभाविक क्रूर स्वभाव को छोड़कर विश्वास को प्राप्त होते हैं वे भगवान् जिनेन्द्र जयवंत रहें।

पूज्य गौतम स्वामी कृत निम्नांकित कृतियाँ प्राप्त हैं।

1. चैत्य भक्ति	2. निषीधिका दण्डक
3. वीर भक्ति	4. गणधरवलय मंत्र
5. सुदं मे आउस्संतो	6. श्रावक प्रतिक्रमण
7. दैवसिक प्रतिक्रमण	8. पाक्षिक प्रतिक्रमण

चैत्यभक्ति से इस भ्रांति का भी उन्मूलन होता है कि जैनाचार्य प्रारम्भ में संस्कृत भाषा में रचना नहीं करते थे। चैत्यभक्ति केवलज्ञान की प्राप्ति के बाद भगवान महावीर की गौतम स्वामी द्वारा की गई स्तुति होकर संस्कृत भाषा की 2580 वर्ष पूर्व की कृति है।

अन्य केवली भगवन्तों, श्रुतकेवली आदि के द्वारा भी भगवान महावीर द्वारा उपदिष्ट ज्ञान श्रुत रूप में संरक्षित रहा जो सबसे पहले आचार्य गुणधर द्वारा लिपिबद्ध किया गया। जो आज हमें कसायपाहुड़ (कषायप्राभृत) के रूप में प्राप्त होता है।

1. आचार्य कुन्दकुन्दः-

आचार्य कुन्दकुन्द भारत की अध्यात्म परम्परा के शिरोमणि हैं। जैन परम्परा में उनका सर्वोपरि स्थान निम्न मंगलाचरण से जाना जा सकता है।

मंगलं भगवान वीरो, मंगलं गौतमो गणी।
मंगलं कुन्दकुन्दाद्यो, जैन धर्मोस्तु मंगलम् ।।

सम्पूर्ण आचार्य परम्परा को कुन्दकुन्द आदि कहकर समेटना आपके परम्परा में निर्विवाद स्थान को बताता है। आचार्य कुन्दकुन्द दक्षिण भारत के आन्ध्रप्रदेश के अनन्तपुर जिले के कोण्डकुण्डल स्थान में जन्में थे। इसे कोण्डकुण्ड भी कहते हैं। आपकी सर्वमान्य कृतियाँ निम्नांकित हैं।

1. प्रवचनसार	2. पंचास्तिकाय
3. समयसार	4. नियमसार
5. दशभक्ति	6. बारसाणुवेक्खा

7. अष्टपाहुड़

कतिपय विद्वान रयणसार एवं तमिलकाव्य तिरुकुरल का कर्ता भी आपको ही मानते हैं। कहा जाता है कि आपने 84 पाहुड़ों की रचना की है किन्तु वर्तमान में केवल 50 पाहुड़ों के नाम मात्र मिलते हैं। 50 वॉ पाहुड़ झाणज्झयण पाहुड़ (ध्यानाध्ययन प्राभृत) के रूप में 3-4 वर्ष पूर्व ही प्रकाशित हुआ है। **श्रुतसंवेगी मुनि श्री आदित्यसागर जी महाराज** ने अपने शोध पूर्ण अध्ययन के आधार पर विस्तृत प्रस्तावना लिखकर इसे कुन्दकुन्द की कृति सिद्ध किया है।

आपके काल के बारे में विद्वानों में मतभेद है किन्तु अधिकांश विद्वान आपको 1 श.ई. पू. से 1 श.ई. के मध्य का मानते है।

आपका प्रवचनसार लोक हितकारी चिन्तन से परिपूर्ण है तो पंचास्तिकाय वैज्ञानिक तथ्यों से भरा है। समयसार सम्पूर्ण जैन जगत में सर्वाधिक लोकप्रिय अध्यात्म का ग्रंथ है वर्तमान में इसका सुन्दर अँग्रेजी अनुवाद एवं टीका प्रो. पारसमल अग्रवाल द्वारा Soul Science के 3 भागों में नाम से की गई। जो मैंने कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ से प्रकाशित कराई थी।

3. आचार्य धरसेन:-

आचार्य धरसेन का नाम श्रुतपंचमी पर्व से जुड़ा है इस दिन आपने पूर्व साहित्य के एक अंश को पुष्पदन्त एवं भूतबलि नामक मुनियों के माध्यम से लिपिबद्ध कराकर षट्खंडागम ग्रंथ की पूजन कराई थी इस कारण श्रुत पंचमी पर्व ज्येष्ठ सुदी पंचमी को मनाया जाता है।

आपकी एक अन्य कृति **जोणिपाहुड़** का प्रकाशन भी भारतीय ज्ञानपीठ से 2019 में, किया गया है। यह मंत्र शास्त्र एवं आयुर्वेद का अत्यन्त प्राचीन ग्रंथ है। 2010 में प्रज्ञा पुञ्ज आचार्य श्री योगीन्द्रसागर जी ने मुझे इसकी छायाप्रति उपलब्ध कराई थी। एक अन्य प्रति भाण्डारकर ओरियटल रिसर्च इंस्टीट्यूट पुणे से प्राप्त हुई। हमने उक्त दोनों प्रतिलिपियाँ प्रो० राजाराम जी जैन को समर्पित कर उनसे अनुवाद का आग्रह किया था जिसे कृपापूर्वक स्वीकार कर उन्होंने इसे प्रकाशित कराया है।

षट्खंडागम सिद्धान्त ग्रंथों की श्रृंखला में प्रथम क्रम पर है इस पर लिखी गई आचार्य वीरसेन स्वामी की धवला टीका ही वर्तमान में उपलब्ध है। **गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी** द्वारा इस महान ग्रंथ पर सिद्धान्त चिन्तामणि टीका लिखी गई है। जो किसी आर्यिका द्वारा सिद्धान्त ग्रंथ पर लिखी गई प्रथम टीका है। यह टीका भी 16 भागों में होकर अतिविशाल है।

4. आचार्य यतिवृषभ:-

आचार्य यतिवृषभ करणानुयोग समूह के ग्रंथ रचनाकारों में प्रथम है। आपके द्वारा जहां आचार्य गुणधर कृत कसायपाहुड़ पर चूर्णिसूत्र लिखे गये हैं तो तिलोयपण्णती की भी रचना की गई है जो लोक रचना (तीन लोक) को बताने वाला ग्रंथ है। इसमें विशेष बात यह है कि 24 तीर्थंकरों की रचना बताने के क्रम में इसमें बहुत से ऐसे खगोलीय विवरण मिलते हैं जो अन्यत्र नहीं हैं। आप आ. आर्यमंखु एवं आ. नागहस्ति के शिष्य होकर 2सरी श.ई. में उपस्थित थे। डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री ने आपका काल 176 ई. माना है। यह ग्रंथ पूज्य आर्यिका श्री विशुद्धमती माताजी कृत हिन्दी टीका सहित भा. दि. जैन महासभा द्वारा तीन भागों में 1984-1988 के बीच प्रकाशित हो चुका है। इससे पहले यह 2 भागों में सोलापुर से भी छपा था। इस ग्रंथ में सबसे पहले 24 तीर्थंकरों के पाँचों कल्याणकों का विवरण मिलता है। अनेक राजवंशों के वर्णन इसे इतिहास का ग्रंथ बनाते हैं। लेकिन तीन लोक की रचना, आकार, प्रकार, ग्रहों, तारों की स्थिति बताने वाला यह अनुपम ग्रंथ है। त्रिलोकसार आदि ग्रंथों की रचना का आधार तिलोयपण्णत्ती ग्रंथ ही है।

5. आचार्य समन्तभद्र:-

आचार्य समन्तभद्र बहुश्रुत महान आचार्य है। आपका काल दूसरी श. ई. माना जाता है चरणानुयोग के अन्तर्गत श्रावकाचारों की श्रृंखला में अब तक हमें 35 श्रावकाचार मिल चुके हैं तथापि जनमानस में आज रत्नकरंड श्रावकाचार की जो प्रतिष्ठा है वह किसी अन्य श्रावकाचार की नहीं। आज प्रत्येक मन्दिर में दशलक्षण पर्व के दिनों में दश धर्मों का वाचन पं. सदासुखलाल जी की टीका सहित इसी ग्रन्थ से किया जाता है। 5 अणुव्रतों, 12 व्रतों, 11 प्रतिमाओं आदि श्रावक धर्म का विवेचन करने वाला यह प्रामाणिक एवं लोकप्रिय ग्रंथ है।

6. आचार्य वीरसेन:-

आचार्य वीरसेन स्वामी षट्खंडागम पर धवला टीका रचने वाले बहुश्रुत आचार्य हैं। आपका सम्बन्ध मथुरा, हस्तिनापुर एवं चित्तौड़गढ से भी है। आपने षट्खंडागम पर धवला टीका के साथ ही कषायपाहुड़ पर जयधवला टीका भी लिखी किन्तु वे इसे पूर्ण न कर सके। वे सिद्धान्त के पारगामी विद्वान होने के साथ महान गणितज्ञ भी थे। धवला टीका की प्रशस्ति के अनुसार आप धर्मग्रंथों, सिद्धान्त, ज्योतिष, व्याकरण एवं न्याय के वेत्ता तथा भट्टारक पद विभूषित थे। इसकी प्राचीनतम ताड़पत्रीय प्रति मूडबिद्री (कर्नाटक) में सुरक्षित थी उसके आधार पर आ. शांतिसागर जी महाराज एवं अन्य की प्रेरणा से 16 भागों में सोलापुर/अमरावती से इसका प्रकाशन हुआ। प्राप्त जानकारी के अनुसार सिद्धभूपद्धति टीका भी आपने ही लिखी थी।

इसके बाद आचार्य महावीर, नेमिचन्द सिद्धान्तचक्रवर्ती आ. पद्मनान्दि। आ. प्रभाचद्र आदि अनेक आचार्य साहित्य सृजन में प्रवृत्त हुए।

मुगलकाल में केशववर्णी, भट्टारक नेमिचन्द्र ज्ञानभूषण आदि लेखक हुए किन्तु दिगम्बर मुद्राधारी आचार्यो के ज्यादा विवरण नहीं मिलते। इसके स्थान पर भट्टारकों एवं पंडितों के विवरण मिलते हैं। भट्टारक सुमतिकीर्ति, भट्टारक सकलकीर्ति आदि ने मुस्लिम शासकों के काल में जैन साहित्य की रक्षा की। पं. दौलतराम, पं. भूधरदास, पं. वृन्दावनदास, पं. सदासुखलाल कासलीवाल, पं. टोडरमल जी आदि ने सम्पूर्ण जैन परम्परा को एक नई दृष्टि दी। पं. टोडरमल द्वारा लिखी गई सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका एवं मोक्षमार्ग प्रकाशक आज बहुश्रुत हैं। लेख के सीमित आकार के कारण मैं

पंडितों, भट्टारकों एवं बीसवीं सदी के आचार्यों का विवरण नहीं देकर केवल साहित्य सृजन करने वाले संतों की सूची दे रहा हूँ।

1. चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज
2. भारत गौरव आचार्य श्री देशभूषण जी महाराज
3. महाकवि आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज
4. राष्ट्रसंत आचार्य श्री विद्यानंद जी महाराज
5. संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज
6. प्रज्ञा पुरुषोत्तम आचार्य श्री योगीन्द्रसागर जी महाराज
7. सराकोद्धारक राष्ट्रसंत आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज
8. प्राकृत मनीषी आचार्य श्री सुनीलसागर जी महाराज
9. आचार्य प्रज्ञा सागर जी महाराज
10. क्रांतिकारी संत मुनि श्री तरूणसागर जी महाराज
11. मुनि श्री आदित्यसागर जी महाराज
12. गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी
13. आर्यिका श्री सुपार्श्वमती माताजी
14. आर्यिका श्री विशुद्धमती माताजी
15. प्रज्ञा श्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी आदि

यह सूची बहुत लम्बी हो सकती है किन्तु मैं इसे यहीं विराम दे रहा हूँ।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि जैनाचार्यों की महान परम्परा ने भारतीय संस्कृति के उन्नयन में मौलिक और प्रभावी योगदान दिया। उन्होंने साहित्य की प्रत्येक विधा गद्य, पद्य, चम्पू, काव्य, मुक्तक, खण्ड काव्य, महाकाव्य आदि तथा अनेक भाषाओं प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश, हिन्दी, तेलुगू, मलयालम में साहित्य का सृजन कर भारतीयता का गौरव बढ़ाया है। ज्ञान विज्ञान के सभी क्षेत्रों अध्यात्म, दर्शन, गणित, ज्योतिष, खगोलविज्ञान, व्याकरण, संगीत, वास्तु, आयुर्वेद आदि जैनाचार्यों की लेखन परिधि में समेटे गये हैं। यदि मैं संक्षेप में कहूँ तो भारतीय संस्कृति का मूल्यांकन बिना जैन साहित्य के अध्ययन के संभव ही नहीं है। 2580 वर्ष पूर्व के गणधर इन्द्रभूति गौतम स्वामी से लेकर वर्तमान काल के समस्त मुनिराजों के चरणों में नमन करते हुए मैं अपनी बात को विराम देता हूँ।

जैन तीर्थ वन्दना के हमारे पाठक प्रबुद्ध हैं अतः ये विचार चिन्तन हेतु प्रस्तुत है। आपके सुझावों का सदैव स्वागत है।

महावीर जयंती की शुभ कामनाओं सहित

डॉ. अनुपम जैन,
ज्ञानछाया, डी-14, सुदामानगर, इन्दौर-452 009 (म.प्र.) मो.: 94250 53822

अयोध्या में संपन्न पंचकल्याणक के दृश्य

सर्वोदय की भावना के प्रतीक - तीर्थंकर भगवान महावीर

- डॉ नरेंद्र जैन 'भारती', सनावद

भारतीय संस्कृति में जैन धर्म की वर्तमान चौबीसी के 24 वे तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी हैं, जिन्हें वर्तमान शासन नायक कहा जाता है। जिन्होंने मनुष्य ही नहीं वरन् पशु-पक्षियों सहित जगत के सभी प्राणियों को धर्मोपदेश देकर आत्महित का मार्ग दिखाया था। अतः आज भी आपका जन्मदिवस "महावीर जयंती" के नाम से भारत ही नहीं वरन् संपूर्ण विश्व में अनेक कार्यक्रमों के द्वारा श्रद्धा और भक्ति के साथ मनाया जाता है क्योंकि जगत के लोगों में आज भी उनके बताएं सत्य अहिंसा के सिद्धांतों के प्रति अनन्य आस्था है। इस आस्था का भी कारण है। कहा गया है -

नमः श्री वर्धमानाय, निर्धूत कलिलात्मने।
सालोकानाम् त्रिलोकानाम् यदविद्या दर्पणायते।।

अर्थात् जिन्होंने अपनी आत्मा के कर्ममल को धो डाला है और जिनकी विद्या में अलोकाकाश सहित तीन लोक दर्पणवत् प्रतिबिम्बित होते हैं, उन श्री वर्धमान जिनेंद्र को नमस्कार है।

काल गणना के अनुसार भगवान महावीर स्वामी का जन्म 598 ई. पू. में वैशाली गणराज्य में हुआ था। तिलोयपण्णत्ति नामक ग्रंथ में आपके जन्म के संबंध में उल्लेख है-

सिद्धत्थराय पियकारिणीहि णयरम्मिकुंडले वीरो।
उत्तर फग्गुणि रिक्खे चेत्त सिद तेरसीए उप्पण्णो।।

अर्थात् वीर जिनेंद्र का जन्म कुंडलपुर के राजा (पिता)सिद्धार्थ और रानी माता प्रियाकारिणी (त्रिशला) से चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में हुआ था। कालांतर में आप वीर, अति वीर, सन्मति,वर्धमान और महावीर के नाम से जगत् प्रसिद्ध हुए। ये नाम अपनी सार्थकता को सिद्ध करते हैं तथा विभिन्न कार्यों से इनकी यथार्थता का बोध कराते हैं। कहा गया है -

वीरम् कर्मजये वीरं, सन्मति धर्मदेशने।
उपसर्गाग्नि संपाते महावीरं नमामि च।।

जो कर्मों को जीतने में वीर, धर्म का उपदेश देने में सन्मति देने वाले हैं तथा उपसर्ग रूप अग्निपात में महावीर हैं, ऐसे श्री वर्धमान स्वामी को नमस्कार करता हूं। आपके जन्म के साथ में गणराज्य में श्री वृद्धि (संपत्ति की वृद्धि) होने लगी। अतः आप वर्धमान तथा निर्भयता से कार्य करने के कारण 'अतिवीर' के नाम से प्रसिद्ध हुए। भगवान महावीर स्वामी ने राजमहल में अनेक भोगोपभोग सामग्री का उपयोग किया परंतु उनसे उन की तृप्ति नहीं हुई। अतःआप विषय भोगों से विरक्ति होने पर परकीय संयोगों से छुटकारा पाने का रास्ता ढूंढने लगे। सांसारिक बंधनों से मुक्ति पाने के लिए आपने 30 वर्ष की अवस्था में गृह त्याग के मार्ग को चुना और आत्म चिंतन में लीन रहने लगे। 569 ई. पू.को आपने मुनि दीक्षा लेकर शाल वृक्ष के नीचे तपस्या करनी प्रारंभ की। आपकी तप साधना अत्यधिक कठिन थी। तिलोय पण्णत्ति में उनके महावर्तो के संबंध में कहा गया है -

मग्गसिर बहुल दसमी, अवरण्हे उत्तरासु णाथ वणे।
तदिय खमणम्मि गहियं महव्वदं वड्ढमाणेण।।

. वर्धमान भगवान ने मगसिर कृष्ण दसमी के अपरान्ह में उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में रहते नाथवंश में तृतीय उपवास के साथ महाव्रत ग्रहण किये। महावीर स्वामी ने 12 वर्ष तक कठोर तपस्या की।वैशाख शुक्ल दशमी को 557 ई. पू. में जृम्भक नामक ग्राम में शाल वृक्ष के नीचे घातिया कर्मों का नाश करने के बाद आपको केवलज्ञान की प्राप्ति हुई। आप सर्वज्ञ और सर्वदर्शी बन गए, कर्मों के विजेता होने के कारण 'जिन' कहलाये परंतु योग्य गणधर के अभाव में आपकी दिव्य ध्वनि 66 दिनों तक नहीं खिरी। इसका कारण था कि महावीर स्वामी को किसी ऐसे योग्य व्यक्ति की तलाश थी जो उनके उपदेशों को ग्रहण कर जनता को उनका सम्यक् अर्थ समझा सके। योग्य व्यक्ति गौतम गणधर जब उनकी समवशरण रूपी सभा में आये तभी आपने लोकभाषा प्राकृत में सदुपदेश देकर आत्म कल्याण का मार्ग बताया। संसार समुद्र से पार होने के लिए उन्होंने तीर्थ की रचना की अतः वे तीर्थंकर कहलाए।

भगवान महावीर स्वामी ने प्राणियों के हित के लिए अहिंसा,सत्य,अस्तेय,अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य का उपदेश दिया।आपने बताया कि समस्त जीवों पर दया करना धर्म है, क्योंकि दया ही सभी प्राणियों को सदा सुख पहुंचाने वाली है ; यही मोक्ष रूप भवन की सीढ़ी तथा दुखों से छुटकारा दिलाने वाली है। आपका कहना था कि -

सव्वे पाणा पिया उया सुहसाया दुहपड़ि कूला, अप्पिय वहा।
पिय जीविणो जीविउकामा तम्हा रणाति वाएज्ज किंचणं।।

अर्थात् सभी प्राणियों को आयु प्रिय है, सब सुख के इच्छुक हैं, दुख सबके प्रतिकूल है, वध सबको अप्रिय है, सब जीने की इच्छा रखते हैं, इससे किसी को मारना अथवा कष्ट पहु ँचाना उचित नहीं है। तीर्थंकर महावीर ऐसे परमात्मा है जिन्होंने बताया कि संसार के सभी प्राणी यहां तक कि कीट-पतंगों (कीड़े- मकोड़े, पक्षियों) और मनुष्य की आत्मा में कोई अंतर नहीं है। जीव को शुभाशुभ कर्मो के कारण विभिन्न गतियों में आकर नरक, तिर्यंच,मनुष्य और देवगति में आना पड़ता है। अतः उन्होंने सभी प्राणियों को आत्महित के लिए धर्म धारण कर आत्मोथन की प्रेरणा के लिए अहिंसा, संयम और तप साधना को अपनाने पर बल दिया। आपने बताया कि प्रत्येक प्राणी में अपना कल्याण कर परमात्मा बनने की क्षमता है। कर्मो का नाश कर प्राणी शुद्ध बुद्ध, निरंजन और सुख रूप स्थिति को प्राप्त कर सकता है। भगवान महावीर स्वामी के उपदेशों के संबंध में आचार्य समंतभद्र स्वामी युक्त्यानुशासन में कहते हैं -

दया दम त्याग समाधिनिष्ठम्, नय प्रमाण प्रकृताञजसार्थम्।
अधृष्टमन्यैरखिलैः प्रवादै जिनं त्वदीयं मतम् द्वितीयम्।।

महावीर का शासन नय, प्रमाण के द्वारा वस्तु तत्व को बिल्कुल स्पष्ट करने वाला और संपूर्ण प्रवादियों के द्वारा अबाध्य होने के साथ-साथ दया (अहिंसा) त्याग (परिग्रह त्यजन) और समाधि (प्रशस्त ध्यान) तथा दम (संयम) इन चारों की तत्परता को लिए हुए हैं और यही सब उनकी विशेषता है अथवा अद्वितीय है

सर्वान्तवत तद्गुण मुख्य कल्पम,
सर्वांतशून्यम् च मिथोऽनपेक्षम्।
सर्वापदा मन्तकरं निरन्तम्,
सर्वोदयं तीर्थ मिदं तवैव।।

अर्थात् हे भगवान महावीर! आपका सर्वोदयतीर्थ सापेक्ष होने से सभी धर्मो को लिए हुए है। इसमें मुख्य और गौण की विवक्षा से कथन है, अतः कोई विरोध नहीं आता किंतु अन्य मिथ्यावादियो के कथन निरपेक्ष होने से संपूर्णतः वस्तु स्वरूप का प्रतिपादन करने में असमर्थ है। आपका शासन (तत्वोपदेश) सर्व आपदाओं का अंत करने वाला और समस्त संसार के प्राणियों को संसार सागर से पार कराने में समर्थ है, अतः सर्वोदयतीर्थ है।इस प्रकार भगवान महावीर सर्वप्रथम ऐसे महामानव थे जिन्होंने इस युग में 'सर्वोदय' का सूत्रपात किया। आप्तमीमांसा में कहा गया है -

स त्वमेवासि निर्दोषो युक्ति शास्त्राऽविरोधिवाक्।
अविरोधो यदिष्टं ते प्रसिद्धेन न बाध्य ते।।

हे प्रभु वर्धमान स्वामी! आप ही मुझे एकमात्र शुद्ध परमात्मा दृष्टिगोचर हो रहे हैं। आप ही शुद्ध भगवत्ता की दृष्टि से निर्दोष हो।युक्ति, शास्त्र, आगम तर्क से हमने आपको जान लिया है अतः आप ही मेरे लिए "इष्ट" हो। आपके वचन किसी से बाधित नहीं हैं इसलिए आप अविरोधी हो, अतः आप ही पूज्य और वंदनीय हो।

आज की विश्व स्थिति को देखा जाए तो निःसंदेह यह कहा जा सकता है कि शांति की स्थिति बनाए रखने के लिए अहिंसा की महती जरूरत है। आचार में अहिंसा, जीवन में सत्य, वाणी में मृदुता , विचारों में अनेकांत और स्याद्वाद की नीति का पालन करते हुए व्यक्ति सद्कार्य करें तो संतप्त समाज और विश्व स्थिरता के साथ रह सकता है। अतः कहा जा सकता है कि भगवान महावीर के सिद्धांतों की आज भी महती उपयोगिता है।

श्री विद्यासागरम म्यूजियम (svs) का हुआ भव्य शिलान्यास

परम पूज्य आचार्य श्री 108 समयसागर जी महाराज के परम आशीर्वाद से पूज्य मुनि श्री प्रबोधसागर जी महाराज, पूज्य मुनि श्री शैलसागर जी महाराज, पूज्य मुनि श्री अचलसागर जी महाराज के सान्निध्य में अनेकों सिद्धक्षेत्रों के मध्य, आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की प्रारंभिक साधना स्थली जहां आचार्यश्री जी ने प्रथम मुनि दीक्षा आचार्य श्री समय सागर जी महाराज को प्रदान की, प्रथम पंचकल्याणक महोत्सव कराया ऐसे द्रोणगिरी जी के पास एवं मुनि श्री क्षमासागर मुनि श्री सुधासागर जी महाराज आदि की क्षुल्लक दीक्षा स्थली नैनागिरि जी के समीप हीरापुर में श्री विद्यासागरम (svs) म्यूजियम का शिलान्यास विधि विधान के साथ किया गया।

4000 फोटोग्राफ का अद्भुत संकलन होगा: ब्र. वीरेंद्र हीरापुर ने बताया कि श्री विद्यासागरम म्यूजियम में आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के जीवनवृत पर आधारित 4000 फोटोग्राफ का अद्भुत संकलन होगा। यह संपूर्ण परिकल्पना पूज्य निर्यापक श्रमण श्री अभयसागर जी महाराज ससंघ, पूज्य मुनि श्री अजितसागर जी महाराज ससंघ, पूज्य मुनि श्री आगमसागर जी महाराज, पूज्य मुनि श्री शैलसागर जी महाराज एवं एलक श्री धैर्यसागर जी महाराज के आशीष तले पल्लवित हो रही है। कार्यक्रम मुख्य प्रतिष्ठाचार्य ब्र. संजीव भैया कटंगी, ब्र. जय निशांत भैया जी टीकमगढ़,ब्र. राकेश भैया जी सागर के द्वारा सम्पन्न कराया गया। इस मौके पर ब्र. सनत भैया,ब्र. शुभम भैया ,ब्र. सुनील भैया ब्र. देव भैया ,ब्र. वीरेन्द्र भैया आदि व ब्र. अर्चना दीदी ,ब्र. मंजू दीदी, ब्र. पप्पी दीदी आदि मंचासीन रहे।

मेरी आत्मकथा - तीर्थंकर भगवान् महावीर

- प्रो. अनेकांत कुमार जैन, नई दिल्ली

अनेक लोगों ने मेरे जीवन के बारे में बहुत कुछ लिखा है, वो सब मेरे ज्ञान का विषय बनता रहता है, अपने बारे में कुछ न कहो तो जो अन्यान्य लेखक लिखते हैं उसे ही मानकर चलना पड़ता है। इसलिए मैं आज स्वयं ही अपनी कहानी कहना चाहता हूँ।

मेरा जन्म और बचपन

मुझे मेरी माँ ने ही बताया कि मेरे जन्म के पहले उन्होंने 16 प्रकार के मंगल स्वप्न देखे तो पिताजी ने कहा कि तुम भाग्यशाली हो, तुम ऐसे पुत्र की माँ बनने वाली हो जो धर्म तीर्थ का प्रवर्तन करेगा।

मुझे पूरा स्मरण तो नहीं लेकिन जब मैं गर्भ में था तब माता पिता इस जगत के विषय भोगों के प्रति अरुचि रखते हुए,बहुत तत्त्व चर्चा करते थे और संसार और शरीर की क्षण भंगुरता का चिंतवन करते हुए, शाश्वत शुद्धात्मा की अनुभूति की बातें करते हुए प्रातः रोज ही उपवन में भ्रमण करते थे।उनकी इन चर्चाओं का असर अनजाने ही मुझ पर उसी समय से होने लगा था।

मेरी माँ प्रतिदिन णमोकार मंत्र की सुबह शाम कई जाप करती थीं,उस मंत्र की अंतर्ध्वनि और तरंगें मुझे उस समय अंदर ही अंदर महसूस होती थीं। वे प्रतिदिन तीन समय सामायिक भी करती थीं। उनका प्रतिक्रमण और स्तुति मुझे भी विशुद्ध परिणामों से सराबोर कर दिया करती थी।

चैत्र शुक्ला त्रियोदशी को मुझे गर्भ बंधन से मुक्ति मिली और वह दुर्लभ मनुष्य जन्म, और जैन कुल मिला जो भव बंधन से मुक्ति के पुरुषार्थ के लिए नितांत आवश्यक था। जब मेरा जन्म हुआ तब बहुत प्रकार के लोग आए कोई उन्हें सौधर्म इंद्र कह रहा था,कोई शचि इंद्राणी।

मेरा नामकरण

पता नहीं क्यों वे उस समय मुझे मेरी माँ से अलग करके सुमेरु पर्वत की पांडुक शिला पर ले गए और बहुत भक्ति पूर्वक मेरा जन्माभिषेक भी करवाया। जन्म के अनंतर यह आवश्यक होता होगा। गर्भ में 9 माह सिकुड़ कर रहते रहते, मैं भी अकड़ सा गया था। थोड़ा अंगड़ाई लेते समय मैंने सहज ही अपने पैर का अंगूठा मेरु से छू दिया तो मानो भूकम्प सा आ गया,इंद्र घबड़ा गए और मेरी तरफ अत्यंत श्रद्धा से देखते हुए मुझे 'वीर' नाम से पुकारने लगे। मुझ नन्हें बालक को निहार निहार कर अनेक लोग बहुत खुश हो रहे थे और मेरी भक्ति कर रहे थे। कई लोग रत्नों के मुकुट और हार पहने हुए थे। लोग उन्हें इंद्र और इंद्राणी कह रहे थे। बच्चे को देख आनंदित होना तो समझ आता था, लेकिन उनका भक्ति करना मेरी समझ के बाहर था। भक्ति तो भगवान् की होती है और मैं बालक था।पता नहीं वे भविष्य की किस अप्रगट पर्याय को प्रगट रूप में देख रहे थे?

हमारा सुन्दर राजमहल

मेरे जन्म के समय पूरे वैशाली में उत्सव मनाया गया। मैं जिस महल में रहता था, उसका नाम नंद्यावर्त था। वह सात खंड का था। मुझे खेलने में बहुत आनंद आता था। मैं धीरे धीरे चंद्रमा की कलाओं की भांति बड़ा हो रहा था। माँ,मुझे रोज देखतीं और कहतीं आज तो तू कल से भी ज्यादा सुंदर लग रहा है,तू रोज बड़ा हो रहा है। पिताजी ने बताया कि जब से तू माँ के गर्भ में आया, उस दिन से ही पूरे वैशाली की समृद्धि बढ़ने लगी अतः इन सभी कारणों से उन्होंने मेरा नाम वर्धमान रख दिया।

मेरी रुचियाँ और शौक

मुझे बचपन से ही प्रकृति और उसके बीच रहना पसंद था। मैं खूब खेलता कूदता था, कभी नंद्यावर्त की छत पर कुंडग्राम की खूबसूरती निहारता तो कभी सूर्य की तेज रश्मियों से आलोकित प्रकृति को। ये सब देखते देखते मेरे मन में उसी समय से एक अलौकिक जिज्ञासा का प्रादुर्भाव होने लगा था। मैं मन ही मन सोचता था कि इतनी सुंदर प्रकृति,रंगबिरंगे फूल,फलों से लदे वृक्ष,अरुणाचल में उगता हुआ सूर्य,कलकल बहती नदियां,खुले आसमान में कलरव करते उड़ते वृहंग,वनों में अठखेलियाँ करते मृग, उपवन में नृत्य करते बहुरंगी मयूर - इतने सुंदर और मन भावन संसार को आखिर क्षण भंगुर क्यों कहा जाता है ?मां बापू इन्हें असार क्यों कहते रहते हैं ? यदि ये असार है तो सारभूत क्या है ?

मेरी जिज्ञासाएं

पूछने पर मेरे साथ खेलने वाले मित्र जो मंत्रियों और खजांचियों के बेटे थे अक्सर कहते कि ये सब ईश्वर ने बनाया है और सिर्फ यही नहीं बल्कि हमको आपको सबको ईश्वर ने बनाया है। वे समझाते थे कि बिना उसकी मर्जी के एक पत्ता भी नहीं हिलता। ईश्वर को खुश करने के लिए उनकी पूजन आवश्यक है, वे नाराज हो जाएं तो सब कुछ तबाह हो सकता है। आदि आदि न जाने कितनी बातें वे मुझे बताते रहते थे। मैं चुपचाप उनकी बातें सुनता और सोच में पड़ जाता।मुझे लगता था कि वास्तविक सत्य कुछ और है। ईश्वर का स्वरूप वैसा नहीं है जैसा ये बताते हैं।वास्तविक सत्य की खोज करने को मैं बहुत उत्सुक हो गया।

मित्र मंडली

एक दिन में नंद्यावर्त के चतुर्थ तल पर वातायन की तरफ मुख करके प्रकृति के सौंदर्य का निरीक्षण कर सोच रहा था कि सत्य के बारे में सबकी राय अलग अलग क्यों है ? जबकि सत्य एक होता है ? इतने में मेरे अनेक मित्र मुझे खोजते हुए मेरे पास आ गए और खेलने की जिद करने लगे। एक ने कहा - वर्धमान,हम तुम्हें एक घंटे से खोज रहे हैं,तुम अब जाकर मिले हो।

दूसरे ने शिकायत के स्वर में कहा कि तुम्हारे माता पिता के मिथ्या वचनों के कारण ऐसा हुआ। क्या हुआ ? ऐसे वचन क्यों कह रहे हो, मेरे माँ बाप सत्याणुव्रत के धनी हैं, वे कभी असत्य वचन नहीं कहते। - मैंने थोड़ी नाराजगी व्यक्त करते हुए कहा।

इस पर तीसरे ने कहा कि देखो जब हम नंद्यावर्त में आये तो भूतल पर माता त्रिशला मिलीं उनसे हमने पूछा कि वर्धमान कहाँ है ? तब उन्होंने कहा कि ऊपर है।हम ऊपर सातवें खंड पर गए तो वहाँ तुम नहीं मिले बल्कि पिताजी राजा सिद्धार्थ मिले तब उनसे हमने तुम्हारे बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कि नीचे के तल पर है। हम फिर भूतल पर आए तो भी तुम नहीं मिले। फिर हम सभी ने प्रत्येक तल का निरीक्षण किया। अब तुम चतुर्थतल पर मिले, इसलिए तुम्हारे माता पिताजी ने हमसे असत्य वचन कहे हैं।

अनेकान्तवाद की खोज

मैं सोच में पड़ गया। फिर विचार करके मैंने उनसे कहा कि देखो न मेरे पिताजी ने असत्य कहा और न ही माता जी ने। किन्तु दोनों की वाणी सापेक्षिक सत्य थी। पिता सातवें तल पर थे अतः उनकी अपेक्षा मैं नीचे ही था और मां भूतल पर थीं, अतः उनकी अपेक्षा मैं चतुर्थ तल पर ऊपर था।

मित्रों में कुछ को कुछ बात समझ में आई और कुछ को नहीं आई। लेकिन उन्हें समझाते समझाते मेरी बहुत बड़ी समस्या का समाधान हो गया। मैंने सत्य के अनुसंधान में एक नवीन प्रमेय को पा लिया। मुझे यही बात सत्य के संदर्भ में दिखाई देने लगी कि लोग सत्य के बारे में अलग अलग कथन क्यों करते हैं ? दरअसल सत्य बहुआयामी होता है और प्रत्येक मनुष्य जिस स्थान या भूमिका में होता है वह उसके किसी एक आयाम को देखता है और उसका कथन करता है। इसलिए अलग अलग दृष्टिकोण सामने आ जाते हैं। वस्तु अनंत धर्मात्मक है। उसमें परस्पर विरोधी धर्म स्वभाव से ही विद्यमान हैं। वस्तु के वास्तविक स्वरूप के बारे में अपने अंदर के इस रहस्य को सुलझाता हुआ मैं बहुत रोमांचित हुआ, मुझे बहुत बड़ी निधि मिल गई थी।

बस, फिर क्या था मैंने इसका नाम **' अनेकांत'** सिद्धांत रख दिया, अब मैं मन ही मन इसके अनेक रूप सोचता हुआ एक दिन नंद्यावर्त के उद्यान में एक झूले पर बैठा आत्मा के स्वरूप का चिंतवन कर ही रहा था कि मेरे भाग्य से उसी समय आकाश मार्ग से चारण ऋद्धिधारी दो दिगम्बर मुनिराज पधारे। उन्हें देख मुझे अपने पूर्वजन्म की स्मृति हो आई जब मैं सिंह के रूप में जंगल में घूम रहा था और तभी इसी तरह दो मुनिराजों ने आकर मुझे संबोधन दिया था और मुझे रत्नत्रय का पहला रत्न सम्यग्दर्शन मिल गया था।

सप्तभंग और स्याद्वाद का रहस्य

वे मुनिराज भी वस्तु स्वभाव का ही चिंतन कर रहे थे और उन्होंने पदार्थ के स्वरूप विषयक एक शंका मेरे समक्ष रख दी। मुझे उसका समाधान अनेकान्तवाद से समझ तो आ गया था लेकिन कहते नहीं बन रहा था। मैं पुनः विचार करते करते नंद्यावर्त की ओर निहारने लगा कि इसी महल में मुझे अनेकान्तवाद समझ आया था, अब उसे कहने के लिए भी यही महल निमित्त बनेगा। मैंने नंद्यावर्त के सात तलों को गिना और महसूस किया कि शंकाएं सात प्रकार की ही हो सकती हैं अतः सात प्रकार से ही सही जबाब दिए जा सकते हैं।

स्यादस्ति आदि सात भंग का आइडिया मुझे तभी आया और मैंने सप्तभंग के माध्यम से उन मुनिराजों की शंका का समाधान कर दिया तो वे बहुत संतुष्ट हुए। मैंने भी तभी से सप्तभंग की इस पद्धति का नाम स्याद्वाद रख दिया।

इसे भी मैं एक संयोग ही कहूँगा कि बाद में नैगम,संग्रह आदि सात नय और जीव अजीव आस्रव आदि सात तत्त्व विषयक अनुसन्धान की शुरुआत भी इसी सात मंजिले महल में मैंने शुरू कर दी थी। लगता है इसी कारण विहार करने से पूर्व उन्होंने मुझे 'सन्मति' नाम से पुकारा और तब से लोग मुझे सन्मति नाम से भी पुकारने लगे। ऐसा लगता है कि मुनिराज 'स' शब्द से सप्तभंग, स्याद्वाद,सप्तनय और सप्ततत्त्व की चर्चा मेरे मुख से सुनकर सुनकर अनुप्रास मिलाते हुए मुझे भी 'स' से सन्मति कहने लगे।

फिर क्या था मैं अब सभी परिस्थिति,घटना और पदार्थ को सापेक्ष दृष्टिकोण से देखने लगा, मुझे लगा कि लोग व्यर्थ ही संघर्ष करते हैं। उनके संघर्ष का मूल कारण है - एकांतिक दृष्टिकोण। अब मेरी उत्सुकता सत्य को समझने के साथ साथ सत्य की अनुभूति की ओर भी बढ़ने लगी। मुझे लगता था कि इस संसार में रहकर और मनुष्य जन्म पाकर मैंने यदि अपनी शुद्धात्मा को प्राप्त नहीं किया तो यह जन्म व्यर्थ चला जायेगा।

माँ की चिंताएं

माता से मैं अक्सर कई जिज्ञासाएं करता था, वे मेरी सभी जिज्ञासाओं का समाधान भी करती थीं, लेकिन पिताजी से चिंता व्यक्त करती थीं कि वर्धमान बहुत गहरी बातें करता है। बाल्यकाल में ही आज वयस्कों की भांति बातें करता है। उन्होंने उन्हें बताया कि तुम्हारा पुत्र जन्म से ही मति, श्रुत और अवधिज्ञान का धारी है।

पिताजी उन्हें निश्चिंत करते रहते थे, कहते कि प्रत्येक जीव का परिणमन स्वतंत्र होता है। तुम्हारा सौभाग्य है कि तुम ऐसे पुत्र की माँ हो जो सब जीवों का कल्याण करने वाला है। ये बातें मैं भी सुनता था, लेकिन मेरे लिए ऐसा क्यों कहा जा रहा है ? यह समझ में नहीं आता था ।मगर यह जरूर लगता था कि इस जीवन का कुछ अर्थ होना चाहिए। जीवन का मुख्य उद्देश्य स्व-पर कल्याण ही होना चाहिए।

मैं ये बातें अपने मित्रों से भी करता था, लेकिन वे समझते नहीं थे। फिर भी खेल खेल में मैं उन्हें अहिंसा की बात तो समझाता ही था। एक दिन उपवन में हम खेल रहे थे, खेलते खेलते जब हम सभी थक गए तो मैंने उनकी थकान मिटाने के बहाने उन्हें ध्यान का अभ्यास करवाया। पद्मासन में बैठकर आंखों को कोमलता से बंद करके अपनी इन्द्रिय चंचलता को समेटकर आत्मा को देखने का अभ्यास मैंने तब से ही प्रारंभ कर दिया था।

अहिंसा का पहला प्रयोग

एक दिन उसी समय एक सर्प हम सभी के बीच आ गया। हमारे सभी मित्र घबड़ा गए, कुछ भाग गए, कुछ मित्र उसकी हत्या करने को भी उत्सुक हो गए। बिडम्बना यह थी कि मैं ध्यान में इतना डूब गया था कि मुझे सर्प का भान तक नहीं हुआ। जब ज्यादा शोर हुआ और मित्र मुझे पलायन को कहने लगे तो मुझे आभास हुआ और मैंने देखा वह सर्प मेरे सामने फण फैलाये बैठा हुआ था। उसी क्षण मैंने उसे शांत भाव से देखा और उसकी पर्याय का निरीक्षण कर उसके भी भीतर विराजमान शुद्ध चैतन्य तत्व के दर्शन किये और ये भावना की कि इस जीव का भी कल्याण हो। मुझे आश्चर्य हुआ कि मेरी इस विशुद्ध भावना का सम्प्रेषण (टेलीपैथी) उस सर्प तक हो गई। विशुद्ध परिणामों की तरंगें प्रत्येक जीव तक पहुंचती हैं। वह सर्प बिना किसी को नुकसान पहुंचाए स्वतः वहाँ से चला गया।

मेरे मित्रों को लगा कि जहरीले सर्प से बड़े बड़े भी भाग जाते हैं लेकिन मैं हिम्मत से वहाँ बैठा रहा और सर्प को भगा दिया। यह प्रसंग पूरी वैशाली में फैल गया। लोग मुझे वर्धमान,सन्मति और वीर नाम से तो पुकारते ही थे,उस दिन से मुझे महावीर भी कहने लगे। मुझे इसमें बहुत बड़े साहस जैसी बात न लग रही थी। मुझे सर्प वाली घटना सहज प्राकृतिक घटना जैसी लग रही थी। लेकिन लोगों को बहुत बड़ी बात लगी। इस घटना से मैंने एक निष्कर्ष निकाला कि मनुष्य अभय इसलिए नहीं है क्यों कि वह करुणाशील नहीं है। उसे वस्तु के स्वरूप का ज्ञान नहीं है। वह दूसरे प्राणियों के प्रति अहिंसक नहीं है इसलिए स्वयं की हिंसा से भयभीत रहता है। तब मुझे लगा कि वास्तव में सुखी होने का और दूसरों को सुखी करने का एक ही उपाय है - अहिंसा। उस दिन मैंने संकल्प किया कि अहिंसा विषय पर पूरा अनुसंधान कर मैं इसे पूरे विश्व को समझाऊंगा।

अहिंसा का दूसरा प्रयोग

बाल्यावस्था के अनंतर मैंने किशोरावस्था में प्रवेश किया। मुझे ध्यान करना, सामायिक करना और संसार की सभी चीजों को जानना -ये प्रमुख चीजें पसंद थीं। मित्रों के साथ नगर भ्रमण भी मुझे बहुत आनंदित करता था। एक दिन अजीब सा वाकया हुआ, मैं मित्रों के साथ नगर में भ्रमण कर रहा था। अचानक गजशाला से भागे हुए एक विक्षिप्त गजराज नगर में उत्पात मचाने लगे, लोगों को रौंदते और दुकानों को नष्ट करते हुए वे बहुत आतंक पैदा कर रहे थे। शुरू में मित्रों और अन्य राहगीरों की भयाकुलता देख थोड़ा मैं भी भयभीत हुआ, किन्तु फिर विचार किया कि यह भी संज्ञी पंचेन्द्रिय जीव है, जरूर महावत के अत्याचारों से भयाक्रांत होकर यह विक्षिप्त हो गया होगा।

मैंने एक प्रयोग किया, अत्यंत करुणा, दया और उसके कल्याण की पावन भावना से मैंने उसके समक्ष जाने का साहस किया। मेरी अंतर्ध्वनि से वह अभिभूत हो गया और शांत भाव से खड़ा होकर मात्र अपनी मुखाकृति से अपने दुःख की अभिव्यक्ति करने लगा। मैंने उसे संबोधित करते हुए कहा - हे ! गजराज, तुम तो स्वयं मंगल स्वरुप हो, जगत का कल्याण करते हो, आज अपने आपे से बाहर कैसे आ गए, मुझसे कहो क्या पीड़ा है ? उसने दो तीन चिंघाड़ भरी, मानो अपनी पीड़ा कह रहा हो, मैं उसकी बात समझ गया। मैंने उससे कहा कि तुम्हारा शरीर बहुत बड़ा है और एक चींटी का शरीर बहुत छोटा, किन्तु दोनों के ही देहालय में शुद्धात्मा विराजमान है। इस शरीर का अभिमान त्याग कर स्वयं के अनंत ज्ञान दर्शन वीर्य और सुख युक्त आत्मा का ध्यान करो, इसी में तुम्हारा कल्याण है।

वह बैठ गया, उसकी आँखों से अश्रुधारा बह रही थी, मानो उसका प्रायश्चित और प्रतिक्रमण एक साथ चल रहा हो। मैंने प्रेम से उसे सहलाते हुए उसकी सूंड को छुआ तो उसने मुझे अपने ऊपर बैठने का निमंत्रण दिया और मैंने उसकी पीठ पर बैठकर उसे प्रेम से वापस गजशाला में भिजवा दिया। लोग देख रहे थे, कोई उसे पागल कह रहा था, कोई शत्रु का षड्यंत्र, कोई अपशब्द कह रहा था तो कोई करुण पुकार, लेकिन ये दृश्य देख कर नगर की जनता ने भी अहिंसा की ताकत देखी। जो कार्य हथियार युक्त सैनिक नहीं कर पा रहे थे, वो कार्य मधुर संभाषण, तत्त्वज्ञानोपदेश और शुभभावों ने कर दिखाया। मगर लोगों ने हमारे संवाद को नहीं सुना, उन्हें तो बस इतना लगा कि वर्धमान वीर ने इस कोमल अवस्था में विक्षिप्त हाथी पर विजय प्राप्त कर ली, जो कोई और नहीं कर सका, अतः तभी से नगर वासी मुझे **'अतिवीर'** संबोधन देने लगे और

इस तरह मेरा एक और नाम पड़ गया।

आपको एक और बात बता दूं, मेरे दिलोदिमाग में जो वस्तु की अनंत धर्मात्मकता वाला अनेकांत सिद्धांत चल रहा था, उसे हाथी के दृष्टान्त के माध्यम से समझाने का आइडिया भी तभी आ गया था और अंधों के द्वारा जो हाथी को टटोल कर अलग अलग राय देने वाला आइडिया भी मुझे राहगीरों की अलग अलग बातें सुनकर ही आया था ।

मेरे विवाह का प्रस्ताव

संसार शरीर और भोगों के प्रति सच्ची उदासीनता ने मुझे आत्मविजयी होने के लिए स्वतः ही उत्साहित कर दिया था। मैं नंद्यावर्त में होने वाले नृत्य संगीत आदि समारोहों में भी बैठता था। मेरी माँ मोह वशात् कुछ ऐसी कोशिशें करती थीं कि मैं महल के सुखों में रम जाऊं।

इसी कारण अचानक एक दिन कलिंग के राजा जितशत्रु मेरे महल में अपनी कन्या यशोदा का विवाह प्रस्ताव लेकर आये। मुझे लग गया था कि निश्चित ही यह आयोजन मेरी माँ ने पिताजी से कहकर जबरजस्ती करवाया होगा। यशोदा सुंदर राजकन्या थी। वह भी जिनधर्म के तत्त्वज्ञान को समझती थी। हमने आपस में काफी चर्चाएं कीं। एक बार तो मेरा मन किया कि विवाह पूर्वक गृहस्थ धर्म का पालन करते हुए, भारत वर्ष में प्रथम वैशाली की इस गणतंत्र व्यवस्था को और अधिक लोकतांत्रिक, सम्पन्न और धर्म शासन युक्त बना कर लोक का कल्याण किया जाय।मुझे पता था यह भविष्य में पूरे विश्व के गणतंत्र और लोकतंत्र का आधार बनेगी।

किन्तु, तत्क्षण मेरे मन में यह भाव भी आया कि, संसार चलाने का यह कार्य तो अनादि से अनंत बार किया है। अब इस मनुष्य जन्म को पाकर, जिनधर्म को पाकर जन्म मरण के चक्कर से पार होना ही एक मात्र उद्देश्य होना चाहिए, नहीं तो चौरासी भवों का पुनः चक्र प्रारंभ हो जाएगा। विवाह करना बुरा नहीं है, लेकिन जब मुझे यह संकल्प पूर्व से ही है कि मुझे जल्दी दीक्षा अंगीकार करनी है तो व्यर्थ के प्रपंच रच कर क्यों किसी का जीवन दुखी किया जाय।

यह मनोभाव मैंने यशोदा से भी प्रगट किये, वह मेरे विचारों से बहुत प्रभावित हुई और उसने मेरा समर्थन किया और कहा कि यदि आपको नेमिनाथ और राजुल का कथानक स्मरण है तो आप मुझे राजुल से कम न समझें। मुझे उसकी बातें सुनकर बहुत संतोष और प्रसन्नता का अनुभव हुआ।

माँ की निराशा

मेरी माँ को बहुत निराशा हुई, वे सोलह स्वप्नों की भविष्यवाणी सत्य होते देख रही थीं, लेकिन सबकुछ जानते हुए भी उनका मोह उनसे यह सब करवा रहा था। उन्होंने नगर के सुप्रसिद्ध संगीतकार गंदर्भ विशारद सोमदत्त और सोमदत्ताश्री के श्रृंगार युक्त गीत और संगीत का आयोजन सिर्फ मेरे लिए किया। क्यों न हो किसी भी माँ को यदि उनका बेटा भरी जवानी में वैराग्य की बातें करे तो चिंता हो ही जाती है। लेकिन मेरे पिताजी निश्चिंत रहते थे, अतः माँ के निर्णयों में टोकाटोकी करके झंझट मोल नहीं लेते थे। उन्हें पता था कि क्या चल रहा है और क्या होने वाला है। वे जानते थे कि हम सभी अपने मिथ्या विकल्पों के गुलाम होते हैं और मात्र उन विकल्पों की पूर्ति के लिए व्यर्थ पुरुषार्थ करते हैं। बाकी जो होनहार है वह तो होकर रहेगी।

संगीत के प्रयोग

सोमदत्ताश्री जब विविध प्रकार से श्रृंगार गीत गा गा कर हार गई तो उसने मुझे खुश करने के लिए वैराग्य गीत भी सुनाए, उसके वैराग्यपूर्ण गीत मेरे मन को भाने लगे। मैंने अंदर ही अंदर निश्चय किया कि मैं परम सत्य की खोज पूरी करके रहूंगा। मैं स्वयं को जानना चाहता था, मैं कौन हूँ? मेरा स्वरूप क्या है? सच्चा सुख कहाँ है ? मुझे लगा कि जब तक मैं इंद्रियों के वशीभूत रहूंगा,तब तक मैं आत्मसाक्षात्कार नहीं कर पाऊंगा।

परिजनों, रिश्तेदारों मित्रों आदि ने मुझे समझाया कि वृद्धावस्था में निष्क्रमण करना, लेकिन मुझे लगा कि यह भव भव का अभाव करने के लिए मिला है न कि प्रतीक्षा के लिये, इसलिए 'अभी नहीं तो कभी नहीं' की भावना मेरे मन में प्रबल हो गई।

त्याग का प्रयोग

इसलिए मैंने राजपाट का त्याग कर दिया। मुझे अपना मनुष्य भव सार्थक करना था। राजपाट संभालने वाले बहुत हैं। मैं नहीं करूंगा तो कोई और कर लेगा। पर खुद का कल्याण तो मुझे स्वयं ही करना होगा।मेरी उम्र लगभग 30 की रही होगी, मुझे ज्यादा देर करना उचित नहीं लगा, मुझे लगा महलों में रहकर और बन्धनों में रहकर मैं पूर्ण स्वतंत्रता की खोज नहीं कर सकता। मैंने स्वयं ही दीक्षा ले ली। मैंने समस्त आभूषणों सहित वस्त्रों का भी पूर्ण त्याग कर दिया। मुझे वीतरागता पसंद थी, वस्त्रों को तो छोड़ो, मुझे इस शरीर से भी राग नहीं बचा था। मैं दिन रात तपस्या करता हुआ पूरे मगध में भ्रमण करने लगा।

मौन उपदेश का प्रयोग

मैंने वस्तु के वास्तविक स्वरुप का निर्णय करने में और आत्मसाक्षात्कार करने में स्वयं को पूर्ण रूप से समर्पित कर दिया। मैं जहाँ जाता लोग मुझसे आशीर्वाद मांगते और उपदेश की अपेक्षा करते। लेकिन मैंने भी निर्णय कर लिया था कि जब तक मैं पूर्ण ज्ञान को प्राप्त न कर लूँ तब तक मैं कोई उपदेश नहीं दूंगा और एक द्रव्य दूसरे द्रव्य का कर्त्ता नहीं है -यह मेरा पक्का निर्णय था, इसलिए मैंने कभी आशीर्वाद की मुद्रा भी नहीं बनाई, मैं एक हाथ पर अपना दूसरा हाथ रख कर पद्मासन का प्रयोग करता था और नासाग्र दृष्टि रखकर आत्म ध्यान करता था। यही मेरा प्रवचन था और यही मेरा सन्देश, लेकिन भव्य जीव ही इस भाव को ग्रहण कर पाते थे। कायोत्सर्ग की मुद्रा से मैं शरीर के प्रति ममत्व त्याग का उपदेश देता था, और समझने वाले समझ जाते थे। बारह वर्षों तक मैंने मौन साधना की, उपदेश दिया लेकिन मुंह से नहीं अपनी चर्या से,साधना से।

पूर्णता का आनंद

फिर एक दिन ऐसा हुआ कि मुझे लोकालोक, भूत भविष्यत् वर्तमान, सभी द्रव्य और उनकी प्रत्येक पर्यायें स्पष्ट प्रत्यक्ष दिखने लगे, लेकिन मुझे अब दुनिया जानने का प्रयोजन रह ही नहीं गया था, मुझे अपना शाश्वत

आत्मतत्व प्राप्त हो गया था, अनुपम असीम अतीन्द्रिय आनंद, सुख का अविनश्वर सरोवर मेरे भीतर प्रगट हो गया था, अब कुछ और पाना शेष नहीं था, मात्र ..केवल ज्ञान और उसका आनंद।

मुझे इस तरह का एहसास भी हुआ कि मेरे जन्म के समय जो सौधर्म इंद्र आये थे वे पुनः आ गए हैं और पूजा अर्चना भी करने लगे, कुबेर भाई पता नहीं किन व्यवस्थाओं में लगे हैं । इन सब बाहरी चकाचौंध से पहले साधनाकाल में मुझे बहुत तकलीफ होती थी, लेकिन अब अंदर का अतीन्द्रिय सुख ऐसा अनुपम और अलौकिक था कि बाहर कुछ भी होता रहे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता था। मैं बाहर कोई भी यत्न नहीं करता था,मेरा सारा पुरुषार्थ अब सहज हो गया था। मेरा गमन, विचरण, उठना, बैठना सब कुछ सहज था और क्यों हो रहा था मुझे नहीं मालूम, न ही मैंने जानने का कभी प्रयास किया।

गौतम का संयोग

कुछ तो अलौकिक था, मैं शांत रहता था और लोग मुझसे उपदेश की अपेक्षा रखते थे। सबसे ज्यादा चिंता सौधर्म को होती थी। सभी वस्तु का स्वरुप समझना चाहते थे, वास्तविक धर्म और आत्मानुभूति का उपाय जानना चाहते थे। लोग चिंतित हो रहे थे, रोज मेरे पास आते मुझे चातक की भाँती निहारते,कुछ प्रतीक्षा करते और चले जाते ।ऐसा क्रम ६६ दिन तक चला। मेरा परिणमन भी सहज था, मैं कुछ कहने से स्वयं को रोक भी नहीं रहा था और कुछ कह भी नहीं रहा था।

सौधर्म ने अपनी पहुँच से कुछ ऐसा जाना कि वस्तु तत्त्व की सूक्ष्मता को समझने वाला कोई विद्वान् पंडित इस सभा में नहीं है, संभवतः इसलिए मैं मौन हूँ। लेकिन न मैं मौन था और न अमौन, बस जो था सो था, लोग अपने मन से अन्यान्य कयास लगा रहे थे। इतने में एक ब्राह्मण विद्वान् मुझे अपने करीब आते दिखाई दिये, उन्हें देखकर मुझे लगा कि ये ज्ञानी जीव हैं,भव्यात्मा हैं। बस,मेरे माध्यम से ओंकार की ध्वनि होने लगी। मुझे लगने लगा कि अपनी अनुभूतियों से जो सत्य मैंने समझा है वह सारा उड़ेल दूँ। उन विद्वान् पंडित जी का नाम इंद्रभूति गौतम था, वे अपने साथ अन्यान्य विद्वानों को लेकर आये थे। पहले मैंने सोचा उस परम रहस्य को इन्हें संस्कृत भाषा में समझाऊं, फिर लगा कि ऐसे तो अहिंसा धर्म की सत्यता अन्य जनसामान्य तक न पहुँच सकेगी, उन दिनों जब बारह वर्ष तक मैंने भ्रमण किया था तब मैंने देखा था कि अधिकांश लोग प्राकृत भाषा में संभाषण करते हैं, उनकी यही मातृभाषा है, अतः स्वतः ही प्राकृत भाषा में मेरी पूरी बात रूपांतरित होने लगी । मेरे मन में हमेशा से सभी छोटे बड़े जीवों के प्रति करुणा का भाव रहा अतः मुझे देखने सुनने नर नारियों के साथ साथ अनेक पशु पक्षी आदि तिर्यंच भी आने लगे।

मेरा पूर्णता

मुझे लगता था कि प्रत्येक जीव मात्र अपनी भूलों के कारण दुखी है और अपनी भूलों को सुधार कर वह मेरी तरह सुखी हो सकता है। लोग मुझसे शरण मांग रहे थे और मैं उनसे कह रहा था कि तुम्हारी शुद्धात्मा ही तुम्हारी वास्तविक शरण है। मैं चाहता था कि ये जो मेरे चरणों को पूज रहे हैं ये मेरे आचरण को धारण करें और स्वयं मेरे समान बनकर सुखी हो जाएँ।

अंत में मुझे यह लगने लगा कि बहुत कह लिया, जो वास्तविक सत्य मैं अपनी आत्मा से प्रत्यक्ष देख रहा हूँ वह कहा नहीं जा सकता, मैंने जितना जाना उसका अनंतवां भाग ही प्ररूपित हो पाया, ज्यादा हो भी नहीं सकता था। जो स्वयं जाना जा सकता है वह कोई और नहीं बता सकता, अतः मैंने **'स्वयं सत्य खोजें और आत्म साक्षात्कार करें'** कहकर बिहार के पावापुर क्षेत्र में दीपावली के दिन प्रातः पूर्ण समाधि धारण कर ली, क्यों कि मुझे सिद्ध पद में स्थित होना था। मेरा शरीर कपूर की तरह उड़ गया, मैं निराकार ब्रह्म स्वरुप सिद्ध बनकर लोकाग्र में स्थित गया और अपने ही शुद्ध स्वभाव में जमकर पूर्ण हो गया। इसे लोग कहने लगे कि मेरा निर्वाण हो गया।

मेरी मान्यता

मैंने अपना कार्य तो कर लिया और आप सभी को मेरे समान ही शाश्वत अविनाशी सुख प्राप्त करने का मार्ग भी बता दिया। अब यदि स्वयं का कल्याण करना है तो आप चाहें तो मेरा अनुसरण कर सकते हैं, यह मार्ग सच्चे सुख का मार्ग है, ध्यान रखियेगा मैंने किसी भी संप्रदाय या पंथ का प्रतिपादन नहीं किया, मैंने आत्मधर्म और मोक्षमार्ग बतलाया था। मेरा यह स्पष्ट मानना था कि कोई भी जीव अपने वास्तविक स्वरुप को समझ कर पूर्ण सुखी हो सकता है । संप्रदाय,जाति,भाषा,वेशभूषा,देशक्षेत्र ये बाधक तत्त्व नहीं हैं, बाधक हैं हमारे अन्दर के राग और द्वेष, और साधक है एक मात्र वीतरागता। जो वास्तव में सच्चे अर्थों में अपना कल्याण करता है, वो ही पर का भी सच्चा कल्याण कर सकता है।

वर्तमान परिस्थिति पर मेरा चिंतन

मैं देखता हूँ लोग धर्म के नाम पर दूसरों के कल्याण की चिंता ज्यादा करते हैं और खुद की उन्हें खबर ही नहीं रहती। मैं यह भी देखता हूँ कि लोग मंदिर में मेरी आकृति को प्रतिष्ठित करके, मेरे गुणों की आराधना करते हैं, मुझे जोर जोर से भक्तियाँ सुनाते हैं लेकिन मेरी सुनते नहीं हैं, बहुत कम लोग हैं जो शास्त्रों का स्वाध्याय करते हैं। मैंने जो कहा उसे पढ़ते और सुनते हैं।

मैं देखता हूँ संसार दुखों से भयाक्रांत भोले श्रावक जोर जोर से बोलते हैं **'वर्तमान को वर्धमान की आवश्यकता है'**,लेकिन हे ! भव्य जीवों, भोले लोगों **मुझे वर्तमान की आवश्यकता तनिक भी नहीं है,** मैं जिस शाश्वत पद पर स्थित हो गया हूँ, वह एक तरफ़ा मार्ग है, वहां जाया जा सकता है, वहां से आया नहीं जा सकता और यदि ऐसा हो भी तो मैंने जिस अतीन्द्रिय सुख को इतने जन्मों के पुरुषार्थ से प्राप्त किया है, क्या तुम चाहोगे कि मैं उसे छोड़कर पुनः संसार में आ जाऊं ? निश्चित ही तुम भी कहोगे नहीं, क्यों कि तुम स्वयं को मेरा भक्त कहते हो, मेरा हित तो तुम भी चाहते ही हो।

लेकिन अब मेरे भीतर किसी भी प्रकार की कोई चाहत आदि नहीं है, जब थी तब यही थी कि स्वयं को मेरा भक्त कहने वाले मेरे समान ही भगवान् बन जाएँ और यदि वास्तव में मेरी सच्ची भक्ति करना चाहते हो तो स्वयं को जानो, पहचानो और उसी में रम जाओ, मैं मान लूँगा तुम मेरे वास्तविक भक्त हो

योगविद्या के प्रवर्तक : तीर्थंकर ऋषभदेव

- डॉ.रूचि जैन, नई दिल्ली

योग' सम्पूर्ण विश्व को भारतीय संस्कृति का एक विशिष्ट एवं मूल देन है। भारत में ही सभी धर्म-दर्शन को किसी न किसी रूप में योग साधना से विकसित किया गया है और इसके आध्यात्मिक, दार्शनिक, सैद्धान्तिक और सांकेतिक सिद्धांत भी शामिल हैं। भारत में प्राचीन काल से ही साधना की निम्नलिखित दो धाराएँ प्रचलित हैं -१.श्रमण संस्कृति २. वैदिक संस्कृति। श्रमण परंपरा जैन धर्म और बौद्ध धर्म से संबंधित है और वैदिक परंपरा में सांख्य-योग, वेदांत, न्याय-वैशेषिक, मीमांसक आदि शामिल हैं। वैदिक परंपरा में योग दर्शन ने योग साधना की विस्तृत पद्धति विकसित की और श्रमण परंपरा में जैन और बौद्ध दोनों ने ही पृथक्करण-पृथक योग साधना पद्धति विकसित की। इन तीनों ने अलग-अलग अलग-अलग हिस्सों से योग साधना को विकसित किया, सभी का मूल उद्देश्य आध्यात्मिक विकास १८ शाश्वत सुखरूप मोक्ष की प्राप्ति ही है। मूलतः उद्देश्य की दृष्टि से तीन एक हैं।

वैदिक दर्शनों में किसी ने भक्ति-उपासना को तो किसी ने ज्ञान को मुक्ति का साधन प्रतिपादित किया और किसी ने यज्ञ–कर्मकांड को साधन माना । गीता दर्शन फलाकांक्षा रहित अनासक्त कर्मयोग को मुक्ति का पथ स्वीकार करता है तो सांख्य-योग की साधना पद्धति अष्टांग योग है। जैन दर्शन की साधना पद्धति का नाम रत्नत्रय है जो सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान तथा सम्यक्चारित्र के रूप में जानी जाती है। बौद्ध दर्शन की साधना पद्धति का नाम अष्टांगिक मार्ग है।

योग विद्या और ऋषभदेव

आज तक के उपलब्ध साहित्य, परंपरा और साक्ष्यों के आधार पर प्रथम तीर्थंकर भगवान् ऋषभदेव योग विद्या के आदि प्रवर्तक माने जाते हैं। जैन आगम ग्रंथों के अनुसार इस अवसर्पिणी युग के वे प्रथम योगी तथा जैन योग के प्रथम उपदेष्टा थे। उन्होंने सांसारिक (भौतिक)वासनाओं से व्याकुल, धन-सत्ता और शक्ति की प्रतिस्पर्धा में अकुलाते अपने पुत्रों को सर्वप्रथम 'सम्बोधि' (ज्ञान पूर्ण समाधि)का मार्ग बताया, जिसे आज की भाषा में योग मार्ग कह सकते हैं।

श्रीमद्भागवत में प्रथम योगीश्वर के रूप में भगवान् ऋषभदेव का स्मरण किया गया है । वहां बताया है कि भगवान् ऋषभदेव स्वयं विविध प्रकार की योग साधनाओं का प्रयोगों द्वारा आचरण करते थे । आज तक प्राचीन से प्राचीन जितनी भी जैन तीर्थंकरों की प्रतिमाएं मिलती हैं वे सभी या तो खड्गासन मुद्रा में मिलती हैं या पद्मासन मुद्रा में। ये जैन योग की प्राचीनता और प्रामाणिकता दर्शाता है।

सिन्धु घाटी की मोहनजोदड़ो (मुर्दों का टीला) नाम से विख्यात सभ्यता ऐतिहासिक रूप से मानव की प्राचीनतम सभ्यता मानी जाती है। विद्वानों की मान्यता है कि इस सभ्यता का जीवनकाल ई.पू. ६००० से लेकर २५०० ई.पू. वर्ष तक रहा है। मोहनजोदड़ो का काल प्राग्वैदिक माना जाता है।

मोहनजोदड़ो के अवशेषों में नग्न पुरुषों की आकृतियों से अंकित मुद्राएं बहु संख्या में मिलती हैं। जान मार्शल के अनुसार वे प्राचीन योगियों की मुद्राएं हैं। इस सम्बन्ध में अन्य विद्वानों के भी समान मत प्राप्त होते हैं- मोहनजोदड़ो की खुदाई से प्राप्त एक मुद्रा पर अंकित चित्र में त्रिशूल, मुकुट विन्यास, नग्नता, कायोत्सर्ग मुद्रा, नासाग्र दृष्टि एवं ध्यानावस्था में लीन मूर्तियों से ऐसा सिद्ध होता है कि ये मूर्तियां किसी मुनि या योगी की हैं जो ध्यान में लीन हैं। रामप्रसाद चांदा का कथन है- "सिन्धु घाटी की अनेक मुद्राओं में न केवल बैठी हुई देवमूर्तियां योग मुद्रा में हैं बल्कि खड्गासन देवमूर्तियां भी कायोत्सर्ग मुद्रा में हैं और वे उस सुदूर अतीत में सिन्धु घाटी में योगमार्ग के प्रचार को सिद्ध करती हैं। वह कायोत्सर्ग ध्यान मुद्रा विशिष्टतया जैन हैं।"

भारतीय इतिहास के विशेषज्ञ डॉ ज्योति प्रसाद जी ने अपनी पुस्तक' भारतीय इतिहास एक दृष्टि' में अनेक प्रमाणों तथा विद्वानों के मतों के आधार पर यह निश्चित किया है कि योग की मूल अवधारणा प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव से प्रारंभ होती है। वे लिखते हैं कि सिन्धु घाटी की अनेक मुद्राओं में वृषभ युक्त कायोत्सर्ग योगियों की मूर्तियाँ अंकित मिली हैं जिससे यह अनुमान होता है कि वे वृषभ लांछन युक्त योगीश्वर ऋषभ की मूर्तियाँ हैं।

इसी बात की पुष्टि करते हुए सुप्रसिद्ध विद्वान् राष्ट्र कवि रामधारी सिंह दिनकर जी लिखते हैं – 'मोहन जोदडो कि खुदाई में योग के प्रमाण मिले हैं और जैन मार्ग के आदि तीर्थंकर ऋषभदेव थे, जिनके साथ योग और वैराग्य की परंपरा उसी प्रकार लिपटी हुई है जैसे कालांतर में वह शिव के साथ समन्वित हो गयी। इस दृष्टि से जैन विद्वानों का यह मानना अयुक्ति युक्त नहीं दिखता कि ऋषभदेव वेदोल्लिखित होने पर भी वेदपूर्व हैं।

योग की परिभाषा –

जैन दर्शन में योग शब्द कई सन्दर्भों में प्रयुक्त हुआ है। जैसे एक तरफ वह संयम, निर्जरा, संवर आदि अर्थ में प्रयुक्त है वहीं दूसरी तरफ मन-वचन-काय की प्रवृत्ति के अर्थ में भी प्रयुक्त है। आचार्य कुंदकुंद कहते हैं यह आत्मा ही संवर और योग है। जैन आगमों में 'योग' शब्द अनेक स्थानों पर संयम और समाधि अर्थ में मिलता है, किन्तु इसका दूसरा सन्दर्भ भी है –मन –वचन-काय का व्यापार, इस अर्थ में भी इसका प्रयोग आचारांग, उत्तराध्ययन सूत्र, तत्त्वार्थसूत्र आदि ग्रंथों में उपलब्ध है। वहां भी मन-वचन-काय की प्रवृत्ति के निरोध की प्रेरणा दी गयी है। वहां यह निर्देशित है कि योगों के व्यापार से आस्रव और उनके निरोध से संवर होता है,जो मुक्ति के लिए आवश्यक सोपान होता है। इस प्रकार प्राचीन साहित्य में योग शब्द संवर, तप,ध्यान,साधना

आदि के लिए प्रयुक्त होता रहा है। आचार्य पद्मनंदी का मानना है कि साम्य, स्वास्थ्य,समाधि,योग,चित्तनिरोध और शुद्धोपयोग; ये सब शब्द एक ही अर्थ के वाचक हैं -

साम्यं स्वास्थ्यं समाधिश्च योगश्चेतोनिरोधनम्।
शुद्धोपयोग इत्येते भवन्त्येकार्थवाचकाः ॥

आचार्य हेमचन्द्र ने योग की परिभाषा निम्नांकित रूप से की है-

चतुर्वर्गेऽग्रणी मोक्षो योगस्तस्य च कारणम्।
ज्ञान-श्रद्धान चारित्ररूपं रत्नत्रयं च सः॥

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष- इन चार पुरुषार्थों में मोक्ष अग्रणी या मुख्य है। योग उस (मोक्ष) का कारण है अर्थात् योग-साधना द्वारा मोक्ष लभ्य है। सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन तथा सम्यक् चारित्र रूप रत्नत्रय ही योग है। ये तीनों जिनसे सधते हैं, वे योग के अंग हैं। उनका आचार्य हेमचन्द्र ने अपने योगशास्त्र के बारह प्रकाशों में वर्णन किया है।

डॉ नंदलाल जैन जी का मानना है कि योग शब्द का पारिभाषिक अर्थ प्रत्येक विचार धारा में भिन्न है। जैन इसे मन, वचन व शरीर की क्रियाओं, प्रवृत्तियों के या आस्रव के रूप में बताते हैं। इसके ठीक विपरीत, योगशास्त्र इसे चित्त की वृत्तियों के निरोध या केन्द्रण के रूप में व्यक्त करते हैं। बौद्ध मन, वचन, काय के सुस्थित होने से प्राप्त बोध को योग कहते हैं। यही नहीं, जैनों के प्राचीन ग्रन्थ में भी इस शब्द के अनेक अर्थ मिलते हैं। शिवार्य के टीकाकार ने इसका अर्थ कायक्लेश, तप और ध्यान किया है। सूत्रकृतांग, समवायांग, दशवैकालिक, उत्तराध्ययन व आवश्यक सूत्र में भी अनेक अर्थों में इसका उपयोग है। अर्थापत्ति से ही हम इसका सही अर्थ मान सकते हैं।

वे आगे लिखते हैं कि व्याकरण के अनुसार भी, 'युजिर' और 'युज्' धातु से बनने वाले योग शब्द के दो अर्थ होते हैं- इनमें से एक अर्थ तो समाधि होता है। पर सामान्य व्यवहार में योग शब्द जोड़, मिलन, बन्धन, संयोग आदि की भौतिक क्रियाओं का निरूपक है। इस दृष्टि से जैन-सम्मत अर्थ अधिक उपयुक्त होता है। योग का एक अन्य अर्थ जोतना भी है जिसके बिना अच्छी आध्यात्मिक प्रगति न हो सके। सारणी में विभिन्न भारतीय पद्धतियों में योग शब्द के अर्थ दिये गये हैं। इससे प्रकट होता है कि योग शब्द की अर्थयात्रा आध्यात्मिक विचारधारा के विकास के साथ भौतिक क्रियाओं से प्रारम्भ होकर आध्यात्मिक विकास की प्रक्रियाओं में विलीन होती है। इसीलिए जैनों ने प्रत्येक तत्त्व को भौतिक (द्रव्य) और आध्यात्मिक (भाव) रूप में वर्गीकृत कर विवरण दिये हैं। डॉ नंदलाल जैन ने विभिन्न परम्पराओं में योग के अर्थ को लेकर एक सारणी भी बनायी है। इस सारणी से स्पष्ट है कि अन्य पद्धतियों में, योग शब्द का अर्थ जैनों की मूल मान्यता से भिन्न है।

सारणी : योग शब्द का अर्थ

उत्तरवर्ती जैनाचार्यों ने अर्थ-समकक्षता प्रदान की है। सामान्य जन में भी यही अर्थ रूढ़ है। इसके मूल अर्थ का अध्यात्मीकरण हो गया है और इसे आत्मा-परमात्मा के मिलन के रूप में प्रकट किया जाता है। यह स्वाभाविक है

पद्धति	अर्थ	समकक्ष पारिभाषिक शब्द
वेद	जोड़ना, इन्द्रिय वृत्ति, इन्द्रिय नियन्त्रण	----
उपनिषद्	ब्रह्म से साक्षात्कार कराने वाली क्रिया	योग
गीता	कर्म करने की कुशलता	योग, कर्मयोग
योग दर्शन	चित्त वृत्ति निरोध	योग
बौद्ध	बोधि प्राप्ति	समाधि
जैन	(i) मन,वचन, शरीर की प्रवृत्ति (ii) संवर और निर्जरा योग (कुन्दकुन्द) (iii) आत्मशक्तिविकास की क्रिया (हरिभद्र)	योग, आस्रव योग, समाधि, ध्यान
व्याकरण	जोड़ना, समाधि, जोतना	

कि योग का ऋणात्मक (विभेदात्मक) अर्थ भी पाया जावे। इसलिए बहिर्मुखी दृष्टि के निरोध और अन्तर्मुखी दृष्टि की जागृति के रूप में इसे व्यक्त किया जाता है। वस्तुतः योग-अभ्यास से शरीर, वचन एवं मन के दूषित मल बाहर हो जाते हैं और अन्तर्मुखी ऊर्जा प्रकट होती है। इसके विपर्यास में, योगी शब्द का अर्थ प्रायः सभी पद्धतियों में एक सा ही माना जाता है। यह एक विशेष प्रकार के असामान्य एवं आध्यात्मिक शक्ति सम्पन्न व्यक्तित्व का निरूपक है।

योग के समान ही संयम शब्द भी है। योगदर्शन में इसका अर्थ धारणा, ध्यान एवं समाधि की त्रयी से लिया जाता है। जैनदर्शन में सम्यक् प्रकार से व्रतादि के पालन के लिये इन्द्रिय एवं प्राणियों की पीड़ा के परिहार के लिए संयम शब्द लिया जाता है। बौद्ध के यहाँ संयम का समानार्थक 'शील' हो जाता है। फिर भी, यह सभी जानते हैं कि संयम और योग परस्पर सम्बन्धित हैं।

इस तरह जैन साधना पद्धति में योग का अपने मौलिक स्वरुप में विशेष महत्व होने के कारण इसमें जैन योग की महत्वपूर्ण भूमिका है। जैन योग के दो प्रमुख सूत्र हैं –संवरयोग और तपोयोग। तप को पुष्ट करने और उसमें गहराई लाने के लिए बारह भावनाओं अर्थात् अनुप्रेक्षाओं का विधान है, अतः भावना योग भी जैन योग का एक प्रमुख अंग है।

योग की विशेषता –

जैन योग का लक्ष्य स्व-स्वरुपोपलब्धि है अर्थात आत्मानुभूति। जहाँ योग एवं अन्य दर्शनों ने जीव का ब्रह्म में लीन हो जाना ही योग का ध्येय निश्चित किया है वहीं जैनदर्शन निज शुद्धात्मा की पूर्ण स्वतंत्रता और पूर्ण विशुद्धि योग का ध्येय निश्चित करता है। जैन दृष्टि के अनुसार योग का अभिप्राय सिर्फ चेतना का जागरण नहीं है बल्कि चेतना का उर्ध्वारोहण भी है। इसका मूल कारण है कि जैन दर्शन ने आत्मा को स्वभावतः ऊर्ध्वगमन स्वभावी माना है। संवर योग और निर्जरा योग जैन दर्शन की ऐसी विशिष्ट और मौलिक पहचान है जो अन्यत्र दुर्लभ है। मन वचन और काय की एकाग्रता साधक को आत्मा के सन्मुख कर देती है और साधक आत्मिक आनंद का अनुभव करने लगता है।

जैन योग आलंबन में व्यक्त के साथ साथ अव्यक्त को भी देखने और अनुभव करने की प्रेरणा देता है। इस तरह हम कह सकते हैं कि जैन योग अनंत सुषुप्त आत्मिक शक्तियों को जागृत करने का सशक्त माध्यम है यह जैन योग और यही जैन योग की प्रमुख विशेषता है।]

आचार्य सिद्धसेन (कुमुदचंद्र जी)

ब्र. डॉ. सविता जैन, रतलाम

आचार्य सिद्धसेन (कुमुदचंद्र जी) को दिगम्बर एवं श्वेताम्बर दोनों परम्पराएँ अपना-अपना आचार्य मानती है। वर्तमान समय में भक्ति के स्तुति काव्य में जितना महत्व आचार्य मांगतुंग जी द्वारा रचित भक्तामर काव्य का है, उतना ही महत्व आचार्य सिद्धसेन (कुमुदचंद्र जी) जी द्वारा रचित कल्याण मंदिर स्त्रोत को भी प्राप्त है। यह स्त्रोत भी तत्रऋद्धि मंत्र से परिपूर्ण अतिशय फल प्रदान करने वाला तथा रूद्रलिड्.गस्फोट के अतिशय से संयुक्त है।

आचार्य सिद्धसेन (कुमुदचंद्र जी) के जीवन-वृत्त के सम्बन्ध में प्रभावक चरित' के अनुसार उज्जयिनी नगरी के कात्यायन गोत्रीय देवर्षि ब्राह्मणकी देवश्री पत्नी के उदर से इनका जन्म हुआ था। ये प्रतिभाशाली और समस्त शास्त्रों के पारंगत विद्वान थे। गुरू वृद्धवादि जब उज्जयिनी नगरी में पधारे तो उनके साथ आचार्य सिद्धसेन (कुमुदचंद्र जी) का शास्त्रार्थ हुआ। आचार्य सिद्धसेन (कुमुदचंद्रजी) गुरू वृद्धवादि से प्रभावित हुए और उनका शिष्यत्व स्वीकार कर लिया। गुरू ने इनका दीक्षा नाम आचार्य कुमुदचन्द्र रखा। आगे चलकर ये. आचार्य सिद्धसेन के नाम से प्रसिद्ध हुए। आचार्य हरिभद्र के "पंचवस्तु'ग्रन्थ में 'दिवाकर' विशेषण उपलब्ध होता है। उसमें बताया गया है कि दुःषमकालरुप रात्रि के लिए दिवाकर-सूर्य के समान होने से दिवाकर का उपाधि इन्हें प्राप्त थी।

आयरियसिद्धसेणेण सम्मइए पइट्‌ अजसेणं।
दूसमणिसा-दिवागर कप्पंतणओ तदक्खेणं।।

आचार्य जिनसेन ने अपने आदिपुराण में सिद्धसेन (कुमुदचंद्र जी) को कवि और वादिगजकेसरी दोनों कहा है-

कवयः सिद्धसेनाद्या वयं च कवयो मताः।
मणयः पद्मरागाद्या ननु काचोऽपि मेचकः।
प्रवादिकरियूथानां केसरी नयकेसरः।
सिद्धसेनकविर्जीयाद्विकल्पनखराड्करः।।

पूर्वकाल में सिद्धसेन (कुमुदचंद्र जी) आदि अनेक कवि हो गये हैं और में भी कवि हूँ पर दोनों में उतना ही अन्तर है, जितना कि पद्मरागमणि और कांचमणि में होता है। वे सिद्धसेन (कुमुदचंद्र जी) कवि जयवन्त हों, जो प्रवादिरूपी हाथियों के झुण्ड के लिए सिंह के समान हैं। नैगमादि नय हो जिनके केशर-अयाल तथा अस्ति-नास्ति आदि विकल्प ही जिनके तीक्षण नाखून थे।

आचार्य हेमचन्द्र ने अपने शब्दानुशासन में "उत्कृष्टेडनूपेन" (२२३१) सूत्र के उदाहरण में "अनुसिद्धसेनं कवयः' द्वारा सिद्धसेन (कुमुदचंद्र जी) को सबसे बड़ा कवि बत्ताया है। जैनेन्द्र व्याकरण के "उपेन' (१।४।।१६) सूत्र को वृत्ति में अभयनन्दिने 'उप-सिद्धसेनं वैयाकरणाः' उदाहरण द्वारा सिद्धसेन (कुमुदचंद्र जी) को श्रेष्ठ वेयाकरण बतलाया है। जिनसेन प्रथम ने अपने 'हरिवंशपुराण' में सिद्धसेन (कुमुदचंद्र जी) की सूक्तियों (वचनों) को तीर्थंकर ऋषभदेव की सूक्तियों के समान सारयुक्त एवं महत्त्वपूर्ण बतलाया है। यथा-

जगत्मसिद्धबोधस्य वृषभस्येव निस्तुषाः।
बोधयन्ति सतां बुद्धि सिद्धसेनस्य सूक्तयः।

अर्थात् जिनका श्रेष्ठ ज्ञान संसार में सर्वत्र प्रसिद्ध है ऐसे श्री सिद्धसेन (कुमुदचंद्र जी) की निर्मल सूक्तियाँ श्रीऋषभ जिनेन्द्र की सूक्तियों के समान सत्पुरुषों की बुद्धि को सदा विकसित करती हैं। सन्मति-टीका के प्रारम्भ में अभयदेवसूरि (१२वीं शती ई-) ने भी इन्हें दिवाकर कहा है। दुषमाकाल श्रमणसंघ की अवचूरि में सिद्धसेन (कुमुदचंद्र जी) को 'दिवाकर' के स्थान-पर 'प्रभावक' लिखा गया है और इनके गुरू का नाम धर्माचार्य बताया है।

इनके सम्बन्ध में यह भी कहा जाता है कि इन्होंने उज्जयिनी में महाकाल के मन्दिर में 'कल्याणमन्दिर' स्तोत्र द्वारा रूद्र-लिड्ग का स्फोटन कर पार्श्वनाथ का बिम्ब प्रकट किया था और विकमादित्य राजा को सम्बोधित किया था। यथा-

'वृद्धवादी _ पादलिप्ताश्चात्र तथा. सिद्धसेनदिवाकरो. येनोज्जयिन्यां. महाकाल-प्रसाद--
रुद्रलिड्.गस्फोटनं. विधाय.. कल्याणमन्दिरस्तवेन..
श्रीपार्श्वनाथबिम्बं ... प्रकटीकृतं .. श्रीविकमादित्यश्च
प्रतिबोधितस्तद्राज्यं तु श्रीवीरसप्ततिवर्षचतुष्टये सन्जातम्।

पट्टावलीसारोद्धार में लिखा है

'तथा सिद्धसेनदिवाकरोऽपि जातो येनोज्जयिन्यां महाकालप्रासादे रूद्रलिड्.गस्फोटनं कृत्वा कल्याणमन्दिरस्तवनेन श्रीपार्श्वनाथबिम्बं प्रकटीकृत्य श्री विकमादित्यराजापि प्रतिबोधितः श्रीवीरनिर्वाणात् सप्ततिवर्षाधिकशतचतुष्टये ४७० विकमे श्रीविकमादित्यराज्यं सन्जातम्।'

गुरूपट्टावली में भी इसी. तथ्य की. पुनरावृत्ति. प्राप्त. होती. है- "तथा श्रीसिद्धसेनदिवाकरेणोज्जयिनीनगर्या .. महाकालप्रासादे लिड्.गस्फोटनं विधाय. स्तुत्या ११. काव्ये श्रीपार्श्वनाथबिम्बं प्रकटीकृतम् कल्याणमन्दिरस्तोत्र कृतम्।'

इन पहट्टावलियों से ज्ञात होता है कि सिद्धसेन (कुमुदचंद्र जी) के प्रभाव से उज्जयिनी में शिवलिड्.गस्फोटन की घटना घटी थी।

दिगम्बर जैन आमनाय में सिद्धसेन (कुमुदचंद्र जी) दिवाकर कि दो रचनाएँ मानी गई है।

(1) सन्मतिसूत्र: (2) कल्याणमन्दिर-स्तोत्रः

।.. सन्मतिसूत्रः

प्राकृत भाषा में लिखित न्याय और दशर्न का यह अनूठा ग्रन्थ है। आचार्य ने नयों का विवेचन कर जैन न्याय की सुदृढ़ पद्धति का आरम्भ किया है। कथन करने की प्रकिया को 'नय' कहा गया है और विभिन्न दर्शनों का अन्तर्भाव विभिन्न नयों में किया है। इस ग्रन्थ में 3 काण्ड हैं:

क. नय काण्ड में 54 गाथाएँ हैं। इसमें नय और सप्तभंगी का कथन है।

ख. ज्ञानकाण्ड में 43 गाथाएँ हैं। इसमें केवलज्ञान और केवलदर्शन का अभेद स्थापित किया गया है।

ग. सामान्य-विशेषकाण्ड या ज्ञेयकाण्ड में 69 गाथाएँ हैं। इसमें पर्याय और गुण में अभेद की स्थापना की गयी है।

।.. कल्याणमन्दिर-स्तोत्रः

इस स्तोत्र में 44 पद्‌यों में भगवान पार्श्वनाथ की स्तुति की गयी है।

सिद्धत्व का महापथिक और नेमावर

निर्मलकुमार पाटोदी, इंदौर

सिद्धपथ का महापथिक, लोकसंत आचार्य परमेष्ठी 108 श्री विद्यासागर जी जब नेमावर की सिद्धता के प्रमाणों से आश्वस्त हो गये, तब पदविहारी के चरण नदी नर्मदाके किनारे पर स्थित प्राचीन नगर नेमावर की ओर बढ़ गए। उनको हरदा,लोहारदा, खातेगांव, बानापुरा, सतवास, आष्टा और आसपास के आसपास के दिगम्बर जैन धर्म के भक्तों ने एकत्रित किए गए साक्ष्यों से अवगत करा दिया था। संघ के मुनि, ऐलक, क्षुल्लक और त्यागी-व्रतियों के साथ 30 दिसम्बर 1995 को हरदा से नेमावर की ओर विहार हुआ। तब रास्ते के किनारे पर उपस्थित किसानों ने प्रसन्न भाव से कहा ये तो चमत्कारी बाबा आए हैं। सभी भक्तों ने भक्तिभाव से एकत्रित होकर लोहारदा के माणकचंद पाटोदी की अध्यक्षता में नेमावर धरा पर आचार्य श्री के आशीर्वाद से एक भव्यतम तीर्थक्षेत्र के निर्माण का स्वप्न साकार करने का प्रस्ताव सर्व स्वीकृति से स्वीकार कर लिया।महुवा वर्षायोग के बाद युगदृष्टा विद्यासागर जी ससंघ का पदार्पण सिद्धक्षेत्र सिद्धवरकूट में हुआ। ग्रीष्मकाल की वाचना के अवसर पर जून 1997 के पहले सप्ताह में अध्यक्ष माणकचंद जी ने पदाधिकारियों के साथ आचार्य श्रीजी से नेमावर में श्री पार्श्वनाथ जी का भव्य जिनालय के शिलान्यास का निवेदन किया। भक्तों की भक्ति पर विचार करके गुरु जी ने स्वीकृति प्रदान कर दी। और सोमवार 2 जून 1997 की प्रात: काल की शुभ वेला में कुल 95 शिष्यों में से 26 मुनिगण और 69 आर्यिका माताओं के साथ पदार्पण हो गया। नेमावर के भू-गर्भ से 15 साल पहले निकली 1008 भगवान पार्श्वनाथ जी की मनोज्ञ पदमासन प्रतिमा जी का रथ यात्रा के साथ नेमावर में प्रवेश हुआ। इंदौर के प्रतिष्ठाचार्य पण्डित नाथूलाल जी शास्त्री के निर्देशन में, नेमिनगर जैन कॉलोनी के पुण्यार्जक मनोजकुमार विमलचंद जी सेठी द्वारा नव निर्मित श्री पार्श्वनाथ जिनालय की वेदी में प्रतिष्ठित कर दी गई। 5 जून 1997 को महाकवि आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महामुनिराज का रजत समाधि दिवस के अवसर पर भव्य आयोजन हुआ। मुनि श्री योगसागर जी, श्री क्षमासागर जी, ऐलक श्री अभयसागर जी, आर्यिका श्री गुरुमती जी, श्री प्रशांतमती जी, श्री दृढ़मती जी ने महाकवि श्री ज्ञानसागर जी के विविध प्रसंगों पर प्रकाश डाला। इसके बाद मूर्धन्य आचार्य के अनन्य शिष्य आचार्य श्री विद्यासागर जी ने स्वयं के गुरु जी से संबंधित घटनाओं पर प्रकाश डाला। शुक्रवार 6 जून 1997 प्रात:काल में नर्मदा किनारे पर स्थित भूमि पर आचार्य श्री जी ससंघ के सानिध्य में भव्यत्तम अद्वितीय पंचबालयति और त्रिकाल चौबीसी जिनालय का शिलान्यास के कार्यक्रम का सौ भाग्य आगरा के श्रेष्ठी श्री निरंजनलाल जी, रतनलाल जी बैनाड़ा को मिला। आचार्य भगवन ने भक्तगणों के समक्ष नव निर्माण होने वाले जिनालय का नामकरण-"श्री दिगम्बर जैन रेवातट सिद्धोदय सिद्धक्षेत्र" घोषित किया। आगम के अनुसार इस पुण्य धरा का कण-कण पांच करोड़ मुनिराजों की तप साधना की विशुद्ध क्षेत्र है। ऐसी तपोस्थली पर ज्येष्ठ शुक्ल एकम, विक्रम संवत 2054 शुक्रवार 6 जून 1997 के शुभ दिन पर पूज्य आचार्य श्री जी से 29 ब्रह्मचारिणी बहिनों को आर्यिका दीक्षा मिली। सिद्धोदय सिद्धक्षेत्र नेमावर की सिद्धत्व भूमि पर पहली बार हुई 29 आर्यिका दीक्षार्थियों का नामकरण

निम्नानुसार हुआ:-

१ आर्यिका श्री सूत्रमती जी २.आर्यिका श्री सुनयमती जी, ३. आर्यिका श्री सकलमती जी, ४.आर्यिका श्री सविनयमती जी, ५. आर्यिका श्री सतर्कमती जी, ६.आर्यिका श्री संयममती जी,७.आर्यिका श्रीसमयमती जी,८.आर्यिका श्री शोधमती जी,९. आर्यिका श्री शाश्वतमती जी, १०. आर्यिका श्री सरलमती जी, ११ आर्यिका श्री शीलमती जी, १२. आर्यिका श्री सुशीलमती जी, १३.आर्यिका श्री शैलमती जी,१४. आर्यिका श्री शीतलमती जी, १५. आर्यिका श्री श्वेतमती जी,१६.आर्यिका श्री सारमती जी, १७. आर्यिका श्री सत्यार्थमती जी,१८. आर्यिका श्री सिद्धमती जी, १९. आर्यिका श्री सुसिद्धमती जी, २०.आर्यिका श्री विशुद्धमती जी, २१. आर्यिका श्री साकारमती जी, २२.आर्यिका श्री सोम्यमती जी, २३. आर्यिका श्री सूक्ष्ममती जी,२४. आर्यिका श्री सुशांतमती जी,२५. आर्यिका श्री शांतमती जी, २६.आर्यिका श्री सदयमती जी, २७. आर्यिका श्री समुन्नतमती जी, २८. आर्यिका श्री शास्त्रमती जी,२९. आर्यिका श्री सुधारमती जी आषाढ़ शुक्ल चौदस, विक्रम संवत २०५४, १९ जुलाई १९९७ के दिन नेमावर की धर्मसभा में अध्यात्म योगी १०८ आचार्य श्री विद्यासागर जी गुरु महाराज ससंघ के वर्षायोग स्थापना की हुई। नेमावर की सिद्धभूमि पर बाइसवें १००८ तीर्थंकर भगवान श्री नेमिनाथ स्वामी जी के तप कल्याणक दिवस श्रावण सुदी ६, विक्रम संवत २०५४ , शनिवार ९ अगस्त १९९७ को आचार्य श्री विद्यासागर जी के करकमलों से सात ब्रह्मचारी भाइयों को क्षुल्लक दीक्षा के सँस्कार किये गये। जिनका नामकरण गुरु महाराज जी ने इस क्रम से किया :

१ क्षुल्लक श्री पुराणसागर जी, २. क्षुल्लक श्री प्रयोगसागर जी, ३. क्षुल्लक श्री प्रबोधसागर जी, ४. क्षुल्लक श्री प्रणम्यसागर जी, ५. क्षुल्लक श्री प्रसादसागर जी, ६.क्षुल्लक श्री प्रभातसागर जी,७. क्षुल्लक श्री परीतसागर जी (वर्तमान में मुनि श्री संभवसागर जी)रेवातट नर्मदा पर वैदिक काल से अर्हत् वचनों का नाद होता रहा है। मालवा की पुण्यश्लोक माटी कीपुण्यता में श्रीवृद्धि का शुभ अवसर श्रावण सुदी पूर्णिमा , विक्रम संवत २०५४, सोमवार १८ अगस्त १९९७में रक्षाबंधन के जिस दिन ७५० मुनिराजों के प्राणों की रक्षा की गई थी उस दिन श्रमण शिरोमणि १०८आचार्य श्री विद्यासागर जी ऋषिराज के करकमलों से १४ ब्रह्मचारिणी बहिनों को

आर्यिका दीक्षा ग्रहण करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। गुरुदेव के मुखारविंद से उनका नामकरण इस प्रकार से हुआ :

१.आर्यिका श्री उपशांतमती जी माता जी, २.आर्यिका श्री अकंपमती जी माता जी, ३. आर्यिका श्री अमूल्यमती जी माता जी, ४.आर्यिका श्री आराध्यमती जी माता जी, ५. आर्यिका श्री ओंकारमती जी माता जी, ६.आर्यिका श्री उन्नतमती जी माता जी,७. आर्यिका श्री अचिंतमती जी माता जी, ८. आर्यिका श्री अलोल्यमती जी माता जी, ९. आर्यिका श्री अनमोलमती जी माता जी, १०. आर्यिका श्री उचितमती जी माता जी, ११. आर्यिका श्री उद्योतमती जी माता जी, १२. आर्यिका श्री आज्ञामती जी माता जी,

1. आर्यिका श्री अचलमती जी माता जी,१४. आर्यिका श्री अवगममती जी माता जी।

संयमपथ के महापथिक आचार्य श्री विद्यासागर जी मोक्षमार्गी की असीम अनुकंपा सिद्धोदय सिद्धक्षेत्र पर पुन: हुई। महायोगीश्वर के अवतरण दिवस अश्विन शुक्ल १५, विक्रम संवत २०५४ शरद पूर्णिमा, १६ अक्तूबर १९९७ वर्ष में पुन: तप-त्यागियों के लिए शुभ दिन आया। चन्द्र ज्योत्सना के आलोकित होने से पहले सूर्य प्रकाश की छाया में १० जिनेश्वरी मुनि दीक्षा दस बाल ब्रह्मचारी शिष्यों ने निम्न क्रम से दीक्षा ग्रहण की :-

१ मुनि श्री अपूर्वसागर जी महाराज, २.मुनि श्री प्रशांतसागर जी महाराज, ३. मुनि श्री निर्वेगसागर जी महाराज, ४. मुनि श्री विनीतसागर जी महाराज, ५. मुनि श्री निर्णयसागर जी महाराज, ६. मुनि श्री प्रबुद्धसागर जी महाराज, ७. मुनि श्री प्रवचनसागर जी महाराज, ८. मुनि श्री पुण्यसागर जी महाराज, ९ मुनि श्री पायसागर जी महाराज, १०. मुनि श्री प्रसादसागर जी महाराज।

नेमावर नीमवती धर्मधरा से मोक्ष प्राप्त भव्य आत्माओं के क्षेत्र पर अब तक ऐलक दीक्षाओं का योग नहीं बना था। वह योग पौष शुक्ल सप्तमीविक्रम संवत २०५४, सोमवार ५ जनवरी, १९९८ को बाल ब्रह्मचारी भाइयों को क्षुल्लक से ऐलक दीक्षा ग्रहण करने का संकेत गुरुवर से मिल गया। गुरुदेव विद्यासागर जी के कर कमलों से निम्न छ: दीक्षार्थियों को ऐलक दीक्षाएँ दी गयी।

1. ऐलक श्री पुराणसागर जी, २.ऐलक श्री प्रयोगसागर जी, ३.ऐलक श्री प्रबोधसागर जी, ४.ऐलक श्री प्रणम्यसागर जी, ५.ऐलक श्री प्रसादसागर जी, ६. ऐलक श्री प्रभातसागर जी महाराज।

अप्रतिम महाकाव्य मूकमाटी के रचयिता मोक्षमार्गी १०८ आचार्य श्री विद्यासागर जी के करकमलों से रेवातट के किनारे स्थित सिद्धोदय सिद्धक्षेत्र नेमावर की मोक्षधरा पर वैशाख शुक्ल ७, विक्रम संवतगुरुवार २२ अप्रैल, १९९९ को २३ बाल ब्रह्मचारियों को जिनेश्वरी मुनि दीक्षा प्रदान करने का शुभ मुहूर्त उपस्थित हुआ। दीक्षा ग्रहण करने वाले शिष्यों का नामकरण निम्नानुसार किया गया:-

१ मुनि श्री ऋषभसागर जी महाराज, २. मुनि श्री अजितसागर जी महाराज, ३.मुनि श्री संभवसागर जी महाराज, ४. मुनि श्री अभिनंदन जी महाराज, ५. मुनि श्री सुमतिसागर जी महाराज, ६.मुनि श्री पदमसागर जी महाराज, ७. मुनि श्री सुपार्श्वसागर जी महाराज, ८.मुनि श्री चन्द्रप्रभसागर जी महाराज, ९. मुनि श्री पुष्पदंतसागर जी महाराज, १०.मुनि श्री शीतलसागर जी महाराज, ११.मुनि श्री श्रेयांशसागर जी महाराज,१२.मुनि श्री पूज्यसागर जी महाराज, १३.मुनि श्री विमलसागर जी महाराज,१४.मुनि श्री अनंतसागर जी महाराज, १५. मुनि श्री धर्मसागर जी महाराज, १६. मुनि श्री शांतिसागर जी महाराज, १७. मुनि श्री कुन्थुसागर जी महाराज, १८. मुनि श्री अरहसागर जी महाराज, १९. मुनि श्री मल्लिसागर जी महाराज,२० मुनि श्री सुव्रतसागर जी महाराज, २१. मुनि श्री नमिसागर जी महाराज, २२. मुनि श्री नेमिसागर जी महाराज, २३. मुनि श्री पार्शवसागर जी महाराज।

पंच कल्याणक और क्षुल्लक दीक्षा :

आत्मानुशासक १०८ आचार्य श्री विद्यासागर जी ससंघ के सानिध्य में ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी, वीर निर्वाण संवत २५४७, विक्रम संवत २०७७, शक संवत १९४२, मंगलवार १५ जून, २०२१से ज्येष्ठ शुक्ल ११, सोमवार २१ जून, २०२१ तक नीमवती/नेमावर, रेवती सलिला नर्मदा के नाभि स्थल पर स्थित साढ़े पांच करोड़ मुनिराजों की निर्वाण स्थली में मज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक आयोजित हुआ। बण्डा (सागर-मध्यप्रदेश) के बाल ब्रह्मचारी विनय भैया जी के कुशल निर्देशन में सम्पन्न हुआ। ४१ पिच्छीधारी संतगणों की सानिध्य में आत्म कल्याण के क्षणों में भक्तगणों ने साक्षी बन कर भरपूर पुण्य लाभ अर्जित किया। तप कल्याणक के शुभ दिवस मध्याह्न में अंतर्यात्री गुरुदेव के कर कमलों से ९ व्रती श्रावकों की क्षुल्लक दीक्षा हुई। दीक्षार्थियों के नाम क्रमश: है:-

१ क्षुल्लक श्री स्वाध्यायसागर महाराज, (ब्र. फूलचंद लुहाड़िया, खातेगांव)

२ क्षुल्लक श्री प्रशांतसागर महाराज, (ब्र. शांतिकुमार, बाँसवाड़ा-राजस्थान)

३ क्षुल्लक श्री मौनसागर महाराज, (ब्र. ताराचंद जैन, मण्डी बामौरा)

४ क्षुल्लक श्री चिंतनसागर महाराज, (सत्येन्द्र जैन, रेवाडी-हरियाणा)

५ क्षुल्लक श्री चिंतनसागर महाराज, (अशोक पाण्डया, बानापुरा-मध्यप्रदेश)

६ क्षुल्लक श्री अटलसागर महाराज, (राजेश जैन, जेसी नगर)

७ क्षुल्लक श्री वैराग्यसागर महाराज, (भागचंद दोषी, किशनगढ़-राजस्थान)

८ क्षुल्लक श्री निकटसागर महाराज, (संतोष जैन पाण्डया, इंदौर-मध्यप्रदेश)

९ क्षुल्लक श्री परीतसागर महाराज, (बसंतीलाल बागीदौरा-राजस्थान)

लोक मंगलकारी संत आचार्य श्री विद्यासागर जी योगीश्वर तो उत्कष्ट गति को धारण कर चुके होंगे।

किंतु हमारे सामने उनके द्वारा किये गये आव्हान को साकार करने का अवसर है। जैसे गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित किया जाय। हर भारतीय अंग्रेजों द्वारा लादा गया नाम इण्डिया को छोड़ कर हिंदी-अंग्रेजी दोनों भाषाओं में सिर्फ भारत बोलें और लिखे। मातृभाषा का उपयोग करें और उसके लिए प्रयास करें। यही जगजीत मुनिश्वर विद्यासागर जी के प्रति हमारा अवदान होगा।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के सम्बद्ध तीर्थक्षेत्रों की सूची

उत्तर प्रदेश के सम्बद्ध तीर्थक्षेत्रों की सूची

श्री बटेश्वर शौरीपुर दिगम्बर जैन क्षेत्र, जिला- आगरा

श्री पावानगर (पावा-नवीन)
जिला- कुशीनगर (उत्तर प्रदेश)

श्री दिगम्बर जेन क्षेत्र पावागिरिजी
जिला- ललितपुर (उत्तर प्रदेश)

श्री दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र चन्द्रपुरी
जिला- वाराणसी (उत्तर प्रदेश)

श्री 1008 जम्बू स्वामी दिगम्बर जैन (अंतिम केवली)
सिद्धक्षेत्र, जिला-मथुरा (उत्तर प्रदेश)

श्री आष्टापद स्वामी आदिनाथ निर्वाण स्थली,
बद्रीनाथ (चमोली) उत्तरांचल

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, जिला- मेरठ

श्री दिग.जैन अतिशय क्षेत्र बड़ागांव, जिला- मेरठ

श्री दिग.जैन अतिशय क्षेत्र ऋषभनगर, फिरोजाबाद

श्री दिगम्बर जैन अति.क्षेत्र कम्पिलजी, जिला-फर्रुखाबाद

श्री कौशाम्बीगढ़ दिग.जैन अति.क्षेत्र, जिला- इलाहाबाद

श्री दिग.जैन अति.क्षेत्र अयोध्याजी, फैजाबाद

श्री 1008 भगवान धर्मनाथ दिगम्बर जैन अतिशय
क्षेत्र,रत्नपुरी, जिला- फैजाबाद

श्री नेमिनाथ दिग.जैन अति.क्षेत्र त्रिलोकपुर,
जिला-बाराबंकी

श्री दिगम्बर जैन श्रावस्ती तीर्थक्षेत्र, जिला- श्रावस्ती

श्री काकन्दी (खुखुन्दू) दिग.जैन अति.क्षेत्र, जिला- देवरिया

श्री दिगम्बर जैन अति.क्षेत्र शांतिनाथ सेरोनजी
जिला- ललितपुर

श्री अतिशय क्षेत्र देवगढ़ पो. जाखलोन, ललितपुर

श्री दिग.जैन अति.क्षेत्र बालाबेहट, जिला- झाँसी

श्री 1008 दिग.जैन अति.क्षेत्र बानपुर, जिला- ललितपुर

श्री दिग.जैन अति.क्षेत्र शांतिगिरी, जिला- ललितपुर

श्री दिग.जैन नेमनाथ अति.क्षेत्र, जिला- एटा

श्री दिग.जैन अति.क्षेत्र चांदपुर-जहाजपुर
जिला- ललितपुर (उत्तर प्रदेश)

श्री दिगम्बर जैन अति.क्षेत्र सुमैका, जिला- जाखलोन

श्री 1008 दिग.जैन अति.क्षेत्र नवागढ़(नंदपुर),
जिला- ललितपुर (उत्तर प्रदेश)

श्री दिगम्बर जैन अति.क्षेत्र गिरारगिरी, जिला- ललितपुर

श्री अहिच्छत्र पार्श्व.दिग.जैन अतिशय क्षेत्र, जिला- बरेली

श्री पद्मप्रभु दिग.जैन अति.तीर्थक्षेत्र प्रभासगिरि (पभौसा)
जिला- इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश)

श्री 1008 दिग.जैन अति.क्षेत्र सॉवलिया पार्श्वनाथ

करगुवां, जिला- झाँसी (उ.प्र.)

श्री शांतिनाथ दिग.जैन अति.क्षेत्र कारीटोरन
जिला- ललितपुर (उत्तर प्रदेश)

श्री 1008 भ. ऋषभदेव दिग.जैन तीर्थस्थल सीरोन
जिला-ललितपुर(उ.प्र.)

श्री सुपार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर (अतिशय क्षेत्र), वाराणसी (उ.प्र.)

श्री भदैनी जी दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र भदैनी, वाराणसी

श्री दिगम्बर जैन अति.क्षेत्र कुंकुभग्राम जिला- देवरिया

हरियाणा के तीर्थक्षेत्रों की सूची

श्री 1008 भगवान आदिनाथ दिगम्बर जैन
अतिशय क्षेत्र
मु.पो.- रानीला, तहसील- चरखी-दादरी
जिला- भिवानी (हरियाणा)

Shri 1008 Bhag. Parshwanath Dig.Jain Atishay
Kshetra Hansi PunyodayTirth
3rd K.M. Stone,Hansi-Hisar Road
NH-10, Hansi- 125 033
Dist.- Hisar (Haryana)

बिहार के सम्बद्ध तीर्थक्षेत्रों की सूची

श्री चम्पापुर दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र, जिला- भागलपुर

श्री मंदारगिरि सिद्धक्षेत्र दिग.जैन जिला- भागलपुर

श्री दिग.जैन सिद्धक्षेत्र राजगृही,जिला- नालंदा

श्री पावापुरीजी सिद्धक्षेत्र दिग.जैन जिला- नालंदा

श्री कमलदह सिद्धक्षेत्र दिग.जैन, जिला - पटना

श्री गुणावाजी सिद्धक्षेत्र दिग.जैन, जिला- गया

श्री सम्मेदशिखरजी दिग.जैन बीसपंथी कोठी
जिला- गिरिडीह (झारखण्ड)

श्री सम्मेदशिखर दिग.जैन तेरापंथी कोठी
जिला- गिरिडीह (झारखण्ड)

श्री दिग.जैन सिद्धक्षेत्र कोल्हुआ पहाड़
जिला- चतरा-हजारीबाग (बिहार)

श्री कुण्डलपुर अति.क्षेत्र दिग.जैन, जिला-नालन्दा

उड़ीसा के तीर्थक्षेत्रों की सूची

श्री खण्डगिरि उदयगिरि दिग.जैन सिद्धक्षेत्र
जिला- पुरी (उड़ीसा)

श्री खण्डगिरि उदयगिरि दिग.जैन सिद्धक्षेत्र, कटक

मध्य प्रदेश के सम्बद्ध तीर्थक्षेत्रों की सूची

श्री 1008 दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र (कुण्डलगिरि)
जिला- दमोह (मध्यप्रदेश)

श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र चूलगिरि बावनगजा ट्रस्ट
जिला- खरगोन (पूर्व निमाड़) म.प्र.

श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र सिद्धवरकूटजी
ओंकारेश्वर-450554 (पूर्व निमाड़) म.प्र.

श्री 1008 दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र अहारजी
जिला- टीकमगढ़ (मध्यप्रदेश)

श्री 1008 दिग.जैन सिद्धक्षेत्र रेशंदीगिरि, जिला- छतरपुर

श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र पावागिरि,
जिला- खरगोन (प.निमाड़) म.प्र.

श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र सोनागिरि, जिला- दतिया

श्री 1008 दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि क्षेत्र
जिला- छतरपुर (मध्यप्रदेश)

श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र मुक्तागिरि (मेढ़ागिरि)
जिला- बैतूल (मध्यप्रदेश)

श्री दिगम्बर जैन रेवातट सिद्धोदय सिद्धक्षेत्र, नेमावर
तह.- खातेगांव, जिला-देवास (म.प्र.)

श्री 1008 भ.शांतिनाथ दिग.जैन अति.क्षेत्र
जिला- जबलपुर (मध्यप्रदेश)

श्री दिगम्बर जैन अति.क्षेत्र बूढ़ी चंदेरी
जिला- अशोकनगर (मध्यप्रदेश)

श्री 1008 दिगम्बर जैन अति.क्षेत्र पपौराजी
जिला- टीकमगढ़ (मध्यप्रदेश)

श्री दिगम्बर जैन अति.क्षेत्र मक्सी पार्श्वनाथ,
जिला- शाजापुर (मध्यप्रदेश)

श्री दिगम्बर जैन अति.क्षेत्र थुबोनजी, जिला- गुना

श्री दिगम्बर जैन अति.क्षेत्र तालनपुर, जिला - धार

श्री दिग.जैन अति.क्षेत्र पटनागंज रहली, जिला- सागर

श्री दिग.जैन अति.क्षेत्र पनागर, जिला- जबलपुर

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र बड़ा मंदिर चौबीसी मंदिर
जिला- अशोकनगर (मध्यप्रदेश)

श्री दिग.जैन अति.क्षेत्र (गोलाकोट) पचराई,
जिला-शिवपुरी(म.प्र.)

श्री दिगम्बर जैन अति.क्षेत्र बीना (बारहा)
जिला- सागर (मध्यप्रदेश)

श्री शांतिनाथ दिग.जैन अति.क्षेत्र मनहरदेव
जिला- ग्वालियर (मध्यप्रदेश)

श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन अति.क्षेत्र बजरंगगढ़
(शांतिनगर), जिला- गुना

श्री दिगम्बर जैन अति.क्षेत्र खजुराहो, जिला- छतरपुर

श्री दिग.जैन अति.क्षेत्र कुंडलगिरि (कोनीजी)
जिला- जबलपुर (मध्यप्रदेश)

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पजनारी, जिला - सागर

श्री 1008 दिग.जैन अति.क्षेत्र (श्री चौबीसी मंदिर)
ग्यारसपुर, जिला - विदिशा (मध्यप्रदेश)

श्री दिग.जैन अति.क्षेत्र बंधाजी, जिला - टीकमगढ़

श्री दिगम्बर जैन अति.क्षेत्र सीरागिरि, जिला- पन्ना

श्री 1008 पार्श्व.अति.क्षेत्र पटेरिया, जिला- सागर

श्री दिगम्बर जैन अति.क्षेत्र गुरीलागिरि, जिला- गुना

श्री 1008 शांतिनाथ अति.क्षेत्र ईशुरवारा, जिला- सागर

श्री दिग.जैन अति.क्षेत्र बनेडिया, इंदौर (मध्यप्रदेश)

श्री दिगम्बर जैन अति.क्षेत्र गोम्मटगिरि, इंदौर

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र गोपांचल पर्वत
ग्वालियर-474002(म.प्र.)

श्री दिगम्बर जैन अति.क्षेत्र उरवाया, जिला- शिवपुरी

श्री दिग.जैन अति.क्षेत्र शांतिनगर पर्यटन केन्द्र विकास
समिति, जिला-रायसेन (म.प्र.)

श्री 1008 शांतिनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, सिहोनियाजी, जिला- मुरैना (मध्यप्रदेश)

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र सार्वजनिक न्यास जामनेर जिला- शाजापुर (मध्यप्रदेश)

श्री दिगम्बर जैन अतिशय तीर्थक्षेत्र सम्मेदगिरि गोसलपुर जिला- जबलपुर (म.प्र.)

श्री 1008 दिगम्बर जैन अतिशय तीर्थक्षेत्र प्यावलजी जिला- दतिया (मध्य प्रदेश)

श्री दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र बड़ागांव, जिला- टीकमगढ़

महाराष्ट्र के सम्बद्ध तीर्थक्षेत्रों की सूची

श्री मांगीतुंगीजी दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र, जिला- नासिक

श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र,कुंथलगिरि, जिला- उस्मानाबाद

श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र गजपंथाजी, जिला- नासिक

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री अंतरिक्ष पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन संस्थान, जिला- वाशिम (महा.)

श्री 1008 चिंतामणि पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र कचनेर, जिला- औरंगाबाद

श्री 1008 महावीर दिग.जैन अति.क्षेत्र तेर जिला- उस्मानाबाद (महा.)

श्री आदिनाथ दिग.जैन संस्थान भातकुली, जिला- अम.

श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर (पहाड़) अतिशय क्षेत्र एलोरा, जिला- औरंगाबाद (महा.)

श्री महावीर स्वामी दिग.जैन अति.क्षेत्र दहीगांव जिला- सोलापुर (महा.)

श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन (अति.क्षेत्र) मंदिर सावरगांव जिला- उस्मानाबाद (महा.)

श्री 1008 शांतिनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र रामटेक जिला- नागपुर (महा.)

श्री दिग.जैन अति.क्षेत्र बाहुबली(कुंभोज) जिला- कोल्हापुर

श्री कलिकुंड पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, कुंडल जिला- सांगली (महा.)

श्री 1008 नेमिनाथ दिग.जैन अतिशय क्षेत्र नवागढ़ (उखलदजी), जिला- परभणी (महा.)

श्री 1008 मुनि सुव्रतनाथ दिग.जैन अति.क्षेत्र पैठण, जिला- औरंगाबाद (महा.)

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र नेमिनाथ, नेमगिरि (जिन्तूर) संस्थान, जिला- परभणी (महा.)

श्री 1008 मल्लिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर अति.क्षेत्र शिरडशहापुर, जिला-परभणी(महा.)

श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, आष्टाकासार, जिला- उस्मानाबाद (महा.)

श्री 1008 पार्श्व.दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र गुफा मंदिर जिला- सातारा (महा.)

श्री 1008 चिंतामणि पार्श्वनाथ दिग.जैन अतिशय क्षेत्र, आसेगांव, जिला- परभणी (महा.)

श्री 1008 पार्श्वनाथ अतिशय क्षेत्र दिगम्बर जैन मंदिर, नाईचाकूर, जिला-उस्मानाबाद(महा.)

श्री 1008 संकटहर पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र जटवाड़ा, जिला - औरंगाबाद (महा.)

श्री 1008 अतिशय क्षेत्र श्री चन्द्रप्रभ दिगम्बर जैन मंदिर, जिला- सोलापुर (महा.)

श्री 1008 पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, खारेपाटन, जिला- सिंधुदुर्ग (महा.)

श्री 1008 कल्पतरु पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, केसापुरी, जिला - बीड़ (महा.)

श्री 1008 चिंतामणि पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, शेळगांव, जिला- परभणी (महा.)

श्री 1008 विमलनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, आंबाजोगाई, जिला- बीड़ (महाराष्ट्र)

श्री 1008 केशरियानाथ दिग.जैन संस्थान जामोद (अतिशय क्षेत्र), जिला- बुलढ़ाणा (महा.)

श्री 1008 आदिनाथ दिग.जैन अति.क्षेत्र,नांदेड़ जिला- नांदेड़ (महाराष्ट्र)

श्री गणाधिपति गणधराचार्य कुंथुसागर विद्या शोध संस्थान श्री क्षेत्र कुंथुगिरि, जिला- कोल्हापुर (महा.)

स्वस्तिश्री जिनसेन भट्टारक पट्टाचार्य महास्वामी संस्थान मठ (करवीर)
(अतिशय क्षेत्र नांदणी), जिला- कोल्हापुर (महा.)

श्री नंदीश्वर दिगम्बर जैन अति.क्षेत्र पंचालेश्वर, जिला- बीड-431130(महा.)

श्री 1008 चंद्रप्रभु दिगम्बर जैन अति.क्षेत्र जिला- जलगांव (महा.)

श्री 1008 चिंतामणि पार्श्व.मंदिर दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र कोठाळा, जिला - जालना-431203 (महा.)

श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर अतिशय क्षेत्र रामलिंग मुद्गड, जिला-लातुर (महा.)

श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर अतिशय क्षेत्र वडाला, जिला-सोलापूर (महा.)

श्री दिगम्बर जैन प्राचीन तीर्थक्षेत्र, अंजनगिरि , जिला नाशिक-422212 (महा.)

गुजरात के सम्बद्ध तीर्थक्षेत्रों की सूची

श्री बंडीलालजी दिगम्बर जैन कारखाना श्री गिरनारजी क्षेत्र, जूनागढ़-362 001 (गुजरात)

श्री पावागढ़ दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र कोठी जिला- पंचमहाल (गुजरात)

श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र कोठी तारंगाजी जिला- महेसाणा- 384 350 (गुजरात)

श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र शत्रुंजय जिला- भावनगर (गुजरात)

श्री 1008 विघ्नहर पार्श्वनाथ अति.क्षेत्र दिगम्बर जैन मंदिर, महुवा, जिला- सूरत

श्री दिगम्बर जैन अति.क्षेत्र घोघाजी, जिला- भावनगर

श्री 1008 चिंतामणि पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र ट्रस्ट, जिला- साबरकांटा (गुजरात)

श्री 1008 पार्श्वनाथ दिग.जैन देरासर तथा श्री 1008 आदिनाथ दिग.जैन देरासर(देवपुरी अति.क्षेत्र) तहसील - खेड़ब्रह्मा(साबरकांठा)गुज.

राजस्थान के सम्बद्ध तीर्थक्षेत्रों की सूची

श्री ऋषभदेव (उदयपुर) दिगम्बर जैन मंदिर (तीर्थक्षेत्र) जिला- उदयपुर (राजस्थान)

श्री चंबलेश्वर पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र जिला - भीलवाड़ा (राजस्थान)

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पदमपुरा, जिला- जयपुर

श्री दिग.जैन अति.क्षेत्र श्री महावीरजी जिला- करौली

श्री आबूजी अति.क्षेत्र दिगम्बर जैन कोठी, जिला- सिरोही

श्री दिग.जैन पार्श्वनाथ अति.क्षेत्र बिजौलिया
जिला- भीलवाड़ा (राजस्थान)

श्री आदिनाथ दिग.जैन अतिशय क्षेत्र चांदखेड़ी
जिला- झालावाड़ (राजस्थान)

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र चमत्कारजी (आलनपुर)
जिला- सवाईमाधोपुर (राजस्थान)

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री मुनिसुव्रतनाथ जी
महाराज, जिला- बूँदी (राजस्थान)

श्री 1008 देवाधिदेव श्री नागफणी पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन
मंदिर जिला- डूंगरपुर(राज.)

श्री दिगम्बर जैन अति.क्षेत्र तिजारा,जिला- अलवर

श्री नसियाजी दिग.जैन अति.क्षेत्र अरथूना
जिला- बाँसवाड़ा (राजस्थान)

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र खंडारजी
जिला- सवाईमाधोपुर (राजस्थान)

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र चूलगिरि
जयपुर-302 003

श्री आदिनाथ दिग.जैन अति.क्षेत्र, जिला- अजमेर

श्री दिगम्बर जैन अति.क्षेत्र मंदिर संघीजी, सांगानेर
जिला- जयपुर (राजस्थान)

श्री दिगम्बर जैन मंदिर (अति.क्षेत्र) काला बाबा विकास
समिति, जिला- दौंसा (राजस्थान)

श्री दिग.जैन मंदिर किला चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा

Tirth Kshetra's of Karnataka

Shri Digamber Jain Atishaya Kshetra Gomteshwar (Bahubali), Dist.- Hasan (Karnataka)

Shri Digamber Jain Atishaya Kshetra Karkal (South Karnataka)

Shri Dig.Jain At.Kshetra Moodbidri (Jain Kashi)

Shri Dig.Jain Ati. Kshetra Stavnidhi, Dist. Belgaon

Shri Digamber Jain Atishaya Kshetra Venur

Shri Digamber Jain Atishaya Kshetra Humach Padmavati, Dist. - Shimoga

Shri Digamber Jain Atishaya Kshetra Gommatgiri Mysore

Shri Digamber Jain Parshwanath Atishaya Kshetra Babanagar, Bijapur

Shri Digamber Jain Sinhangadde Jwalamalini Atishaya Kshetra Narsingharajpura, Dist.- Chikmanglure

Shri 1008 Sahasraphani Parshwanath Digamber Jain Mandir, Bijapur

Shri Digamber Jain Atishaya Kshetra Dharmsthala

Shri Digamber Jain Atishaya Kshetra, Badami

Shri Digamber Jain Atishaya Kshetra Shringeri Dist.- Chikmanglure

Tirth Kshetra's of Tamilnadu

Shri Dig.Jain Atishay Kshetra Ponnur
Tal.- Vandavasi, Dist. North Arcot

Shri Dig.Jain Ati. Kshetra Kanchi (Tirupartrikuram)
Dist. - South Arcot (Tamilnadu)

Bhag. Shri Rishabh Tirthankar Jinalaya Trust
Arnipalayam, Arni - 632 301 (Tamilnadu)

श्री चन्द्रप्रभ दिगम्बर जैन मंदिर, भुलेश्वर मुंबई में भव्य वेदीप्रतिष्ठा महोत्सव संपन्न

मुंबई, भुलेश्वर स्थित श्री चन्द्रप्रभ दिगम्बर जैन मंदिर में भगवान शांतिनाथ एवं भगवान पार्श्वनाथ की वेदी जो जीर्ण हो रही थी उनके स्थान पर नई मार्बल्स की वेदियों का निर्माण कराया गया जिसकी भव्यवेदी प्रतिष्ठा दिनांक ०४ मार्च से ०६ मार्च तक बहुत ही धूम-धाम से हजारों की संख्या में उपस्थित श्रृद्धालुओं एवं परमपूज्य अमोघ कीर्ति एवं मुनि श्री अमर कीर्ति जी

...... शेष पृष्ठ 26 पर

तीर्थक्षेत्र कमेटी की लगेगी 'प्रसन्न' क्लास

आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी कुलचारम से बद्रीनाथ की यात्रा के लिये बढ़ते हुए कुछ दिन मैनपुरी रुके, जहां भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जंबू प्रसाद जैन, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष अशोक दोशी जी ने दर्शन किये और तीर्थ संरक्षण पर चर्चा की। इससे पहले। द्रोणगिरि में भी इस पर लम्बी चर्चा कुलचारम के बाद हो चुकी थी।

लगातार तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा कार्य योजना व भविष्य की योजनाओं के प्रति उत्सुकता दिखाने पर आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी जी ने उन्हें आशीर्वाद देते हुए कहा कि तीर्थक्षेत्र कमेटी कार्यकारिणी के सदस्य अहिच्छेत्र में पहुंचे, वहीं अपने अनुभवों से महत्वपूर्ण उद्बोधन होगा।

सभी को ज्ञात होगा कि आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी का जहां चातुर्मास होता है, उस तीर्थ की काया-पलट हो जाती है और वे फिर आगे बढ़ जाते हैं। चाहे वो शिखरजी में स्वर्णभद्र टोंक हो, बीसपंथी कोठी हो या फिर वहां ताले में पड़े चोपड़ा कुंड को खुलवाने की बात हो। फिर उदगांव को एक श्रेष्ठतम तीर्थ का रूप समाज को देने के बाद कुलचारम तीर्थ को कैसे आकर्षण रूप में बदला, अब भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी को जब वे अपने अनुभव से टिप्स देंगे, तो निश्चय ही समाज के 350 तीर्थों के संरक्षण व सभी की सुरक्षा में यह एक महत्वपूर्ण पहल होगी और राष्ट्रीय अध्यक्ष जंबू प्रसाद जैन के नेतृत्व में एक वर्ष पहले निर्विरोध रूप से बनी कमेटी के लिये मील का पत्थर साबित हो सकता है। वर्तमान कमेटी लगातार साधु-संतों के दर्शन व उनके साथ तीर्थों की सुरक्षा पर चर्चा की एक योजना बना कर चल रही है।

तीर्थक्षेत्र कमेटी ही इस समय जैन समाज की सबसे बड़ी प्राचीन संस्था है, जो बिना बंटे अनवरत 123वें वर्ष में है। आगामी 22 अक्टूबर 2026 से 22 अक्टूबर 2027 तक, पूरे वर्ष एक महामहोत्सव वर्ष मनाने की भी तैयारियां चल रही हैं, जिसके अंतर्गत 2025 के वर्षायोग की शुरूआत में हर जगह तीर्थ सुरक्षा कलश स्थापना, वर्षायोग के दौरान तीर्थ सुरक्षा-संरक्षण से संबंधित 9 अंचल में विद्वत-महिला पत्रकार सम्मेलन आयोजित किये जाने की संभावना है।

तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने बताया कि वर्षायोग, पंचकल्याणक या कोई भी बड़ा महोत्सव हो, उसमें एक हिस्सा तीर्थों की सुरक्षा के लिये रखा जाये। जब एक नये मंदिर का निर्माण हो, तो उसके साथ एक पुराने तीर्थ को जीर्णोद्धार के लिये गोद लें।

नरेंद्र अजमेरा पियुष कासलीवाल, औरंगाबाद

पृष्ठ 25 से शेष......

महाराज के मंगल सानिध्य में संपन्न हुई। वेदी प्रतिष्ठा के सभी क्रियाएं बा.ब्र. सुनील भैया जी के मार्गदर्शन में संपन्न हुई। प्रथम दिन घटयात्रा निकली गयी तथा इन दिनों शाम को सांस्क्रतिक कार्यक्रम, भजन संध्या एवं ब्र. सुनील भैया जी के प्रवचन का लाभ सभी समाज ने लिया।

इस भव्य वेदी प्रतिष्ठा के पावन अवसर पर महाराष्ट्र सरकार के केबिनेट मंत्री श्री मंगलप्रभात लोढ़ा भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के परम संरक्षक श्री वसंत एम.दोशी, राष्ट्रीय महामंत्री श्री संतोष जैन पेंढारी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री नीलम अजमेरा, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री अशोक दोशी, गुजरात अंचल अध्यक्ष श्री पारस बज, राष्ट्रीय जीर्णोद्धार समिति के चेयरमेन श्री अनिल जमगे भी उपस्थित रहे।

भगवान शांतिनाथ के वेदी निर्माण के पुण्यार्जक श्री एस.पी. जैन परिवार एवं भगवान पार्श्वनाथ भगवान की वेदी निर्माण के पुण्यार्जक श्री मनोज राममोहन जैन जी परिवार रहे। तीन दिवसीय वेदी प्रतिष्ठा के कार्यक्रम में मंदिर के ट्रस्टी श्री एस.पी. जैन, श्री डी.सी जैन, श्री दिनेश जी पांडे, श्री सुरेश पहाड़िया, श्री मनोज जैन, श्री सुरेश जैन (लायन) डॉ. आर.के. बक्षी, चातुर्मास कमेटी के श्री अजित गांधी एवं श्री संजय राजा जैन, श्री कमल कासलीवाल, श्री प्रवीण जैन, श्री सुरजीत जैन, श्री नीरज जैन, श्री राकेश जैन, श्री शैलेन्द्र जैन, श्री मुकेश जैन, श्री रविन्द्र जैन, श्री संजीव जैन, श्रीमती रचना जैन, श्रीमती बिन्नी जैन मंदिर स्टाफ से दाताराम जी आदि सभी श्रद्धालुओं ने अपना योगदान एवं सहयोग दिया। कार्यक्रम के पश्चात वात्सल्य भोजन की व्यवस्था श्री डी.पी. जैन, श्री मनोज जैन, श्री रमणलाल बाकलीवाल परिवार की ओर से रही।

पावापुरी (बिहार) सिद्धक्षेत्र

आज की भाववंदना हैं, प्राचीन "अपापपुरी" नामक नगरी, जिसे बाद में पावापुरी (बिहार) के नाम से पहचान मिली। इस भरत क्षेत्र में, चतुर्थ काल का अंतिम 120 वां कल्याणक (भगवान महावीर स्वामी का मोक्ष कल्याणक) जिस स्थान पर हुआ वह पावापुरी एक जैन सिद्धक्षेत्र है जो बिहार शरीफ से 8 किलोमीटर और राजगीर से 31 किलोमीटर दूर स्थित है।

इसे अपापुरी (पापरहित नगर) के नाम से भी जाना जाता है। वीर निर्वाण सम्वत 2550 पूर्व भगवान महावीर स्वामी ने इसी स्थान पर अंतिम निर्वाण प्राप्त किया था।

पावापुरी प्राचीन काल में मगध साम्राज्य का हिस्सा था और इसे मध्यम पावा या अपवापुरी कहा जाता था। उस समय पावापुरी के राजा हस्तिपाल थे। व मगध के राजसिंहासन पर राजा श्रेणिक राज करते थे, जिनका पुत्र अजातशत्रु ने राजा श्रेणिक के बाद राज्यभार निर्वहन किया था।

जृंभिकाग्राम (वर्तमान में जमुई ग्राम) जो कि बिहार प्रान्त में है, जहाँ ऋजुकुला नदी के तट पर भगवान महावीर को केवलज्ञान हुआ था।

ऋजुकुला में केवलज्ञान प्राप्त हो जाने के बाद, शासन नायक महावीर भगवान द्वारा तत्वज्ञान का प्रचार देश के विभिन्न हिस्सों में समवसरण द्वारा प्रारंभ हुआ।

फिर वह जब एक माह का समय शेष रह गया, तो वह पावापुरी पहुंचे और वहां शाल वृक्ष के नीचे खड्गासन अवस्था मे ध्यान में स्थिर रहे और कार्तिक महीने के कृष्ण पक्ष के 14वें दिन की रात के आखिरी पहर में उन्होंने अपना नश्वर शरीर छोड़ दिया और सिद्ध अवस्था को प्राप्त किया।

भगवान महावीर स्वामी के समवशरण में -

गणधर - ११
केवली मुनि - ७००
मुनि - १४०००
आर्यिका - ३६०००
श्रावक - १ लाख
श्राविकाएं - ३ लाख उपस्थित थे, जिन्होंने साक्षात जिनेन्द्र भगवान की दिव्य वाणी से शुद्ध तत्वज्ञान का रसास्वादन किया।

श्री दिगंबर जैन सिद्ध क्षेत्र पावापुरी बिहार (सिद्ध क्षेत्र)

यहां पर मंदिरों की संख्या 4 है, इस स्थान पर पहाड़ नहीं है। पद्म सरोवर नामक एक बड़ी झील के मध्य में जल मंदिर स्थित है, यहां भगवान महावीर जी को मोक्ष प्राप्त हुआ था। झील के केंद्र में संगमरमर का उपयोग करके बनाया गया सफेद मंदिर है। पूरी झील में फैले कमल के फूल झील को अत्यधिक सुंदरता प्रदान करते हैं। मंदिर में भगवान महावीरजी के प्राचीन चरण चिह्न स्थापित हैं।

कहा जाता है कि यह उस स्थान को चिह्नित करता है जहां उनके चरम शरीर का अंतिम संस्कार किया गया था। कहा जाता है कि इस मंदिर का निर्माण भगवान महावीर के बड़े भाई राजा नंदीवर्धन ने कराया था। इसे विमान के आकार में बनाया गया है और इसके पार तट से मंदिर तक 600 फीट लंबा पत्थर का पुल है।

आवागमन के साधन
रेलवे स्टेशन - पावापुरी हाल्ट - 11 कि.मी.
बस स्टेण्ड - बिहारशरीफ - 12 कि.मी.
पहुँचने का सरलतम मार्ग - पटना से 95 कि.मी., गया से 85 कि.मी.
निकटतम प्रमुख नगर - पटना - 95 कि.मी., गया - 85 कि.मी.
वायुयान द्वारा
निकटतम हवाई अड्डा पटना 101 किमी पर है। भारतीय एयरलाइंस पटना को कलकत्ता, बॉम्बे, दिल्ली, रांची और लखनऊ से जोड़ती हैं।
समीपवर्ती तीर्थक्षेत्र
कुण्डलपुर - 25 कि.मी.,
राजगिर - 40 कि.मी.,
गुणावाँजी - 25 कि.मी.,
मन्दारगिरजी - 300 कि.मी.,
चम्पापुरी - 250 कि.मी.,
श्री सम्मेद शिखरजी -225 कि.मी.,

- जैन धर्म तीर्थ यात्रा से साभार

JALMANDIR, PAWAPURI
BIHAR

श्री महावीर स्वामी जी

Sizes

200x200MM
600x600MM
600x1200MM

VAILABLE SIZES : 800X2400MM | 1200X1800MM | 800X1600MM | 600X1200MM | 600X600MM | 600X300MM | 400X400MM | 300X300MM | 200X200MM | 100X100MM

Pavit Ceramics Pvt. Ltd.
303, Camps Corner-II, Near Prahladnagar Garden, Satellite,Ahmedabad-380015, Gujarat, INDIA
Ph : +91 79 40266000, info@pavits.com, www.pavits.com **Toll Free : 1800 233 3366** (9.30am to 6.30pm)

RNI-MAHBIL/2010/33592
Published on 1st of every month
License to post without prepayment -
WPP No. MR/Tech/WPP-90/South/2025-27
Jain Tirth vandana, English-Hindi March 2025
Posted at Mumbai Patrika Channel, Mumbai GPO Sorting Office
Mumbai-400001, Regd. No. MCS/160/2025-27
Posted on 16th and 17th of every month

With Compliments

From:

GFL

GUJARAT FLUOROCHEMICALS LTD.

(Company of Siddho Mal-Inox Group)

INOX

GROUP OF COMPANIES

Corporate office :
INOX Towers, 17, Sector 16-A,
NOIDA - 201 301 (U.P.)
Tel: 0120-614 9600
Email : contact@gfl.co.in

New Delhi Office :
612-618, Narain Manzil, 6th Floor,
Barakhamba Road,
New Delhi - 110 001
Tel: +91-11-23327860
Email : siddhomal@vsnl.net

Printer, Publisher and Editor UMANATH RAMAJOR DUBEY on behalf of BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN TIRTHKSHETRA COMMITTEE, Hirabaug, 2nd Floor, C P Tank, MUMBAI-400 004. Printed at TRIMURTI PRINTERS, 5/7 Dadarkar Building, V P Road, C P Tank, MUMBAI-400 004 . Published from BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN TIRTHKSHETRA COMMITTEE, Hirabaug, 2nd Floor, C P Tank, MUMBAI-400 004.